साहस का मूल्य
कहानी कप्तान कुक की

लेखनः एन डॉनगन जॉनसन

चित्रः पिल्लेजी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

साहस का मूल्य
कहानी कप्तान कुक की

लेखनः एन डॉनगन जॉनसन

चित्रः पिल्लेजी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

यह कहानी कप्तान कुक की है जिनके साहस और नौसंचालन के ज्ञान ने उन्हें अब तक के सबसे महान खोजियों में एक का दर्जा दिया।

यह कहानी उनके जीवन की घटनाओं पर आधारित है। जेम्स कुक के जीवन के अन्य ऐतिहासिक तथ्य क़िताब के अंतिम पृष्ठ पर दिए गए हैं।

एक समय की बात है . . .

कई सालों पहले जेम्स नाम का एक लड़का इंग्लैण्ड के उत्तर में स्थित यॉर्कशर की एक पहाड़ी पर खड़ा था। जाते बसन्त की चमकदार दोपहर का वक़्त था और वह तेज़ी से गोशाला की सफ़ाई कर रहा था ताकि वह रोज़बैरी टॉपिंग तक चढ़ने के बावजूद रात के खाने के पहले घर पहुँच सके।

जेम्स मेहनती लड़का था। उसके पिता एक बड़े ज़मींदार के लिए खेती का काम करते थे जिसमें जेम्स भी मदद करता था। जेम्स गाँव के स्कूल में पढ़ता था क्योंकि ज़मींदार मिस्टर स्कॉटवे ने कहा था कि होशियार जेम्स को थोड़ी शिक्षा पा लेनी चाहिए। इससे शायद वह बड़े होने पर किसी दुकान में नौकरी पा सकेगा।

जेम्स ने किसीको यह बताया नहीं था, पर वह किसी दुकान में काम करना ही नहीं चाहता था। वह तो समुद्र में सफ़र करना चाहता था। वह समुद्र की लहरों और उनमें जहाज़ों को चलाने के सपने देखा करता था। उसे जब भी मौका मिलता वह पहाड़ी पर चढ़ता और पूरब की दिशा में देखता। समुद्र उसी ओर तो था।

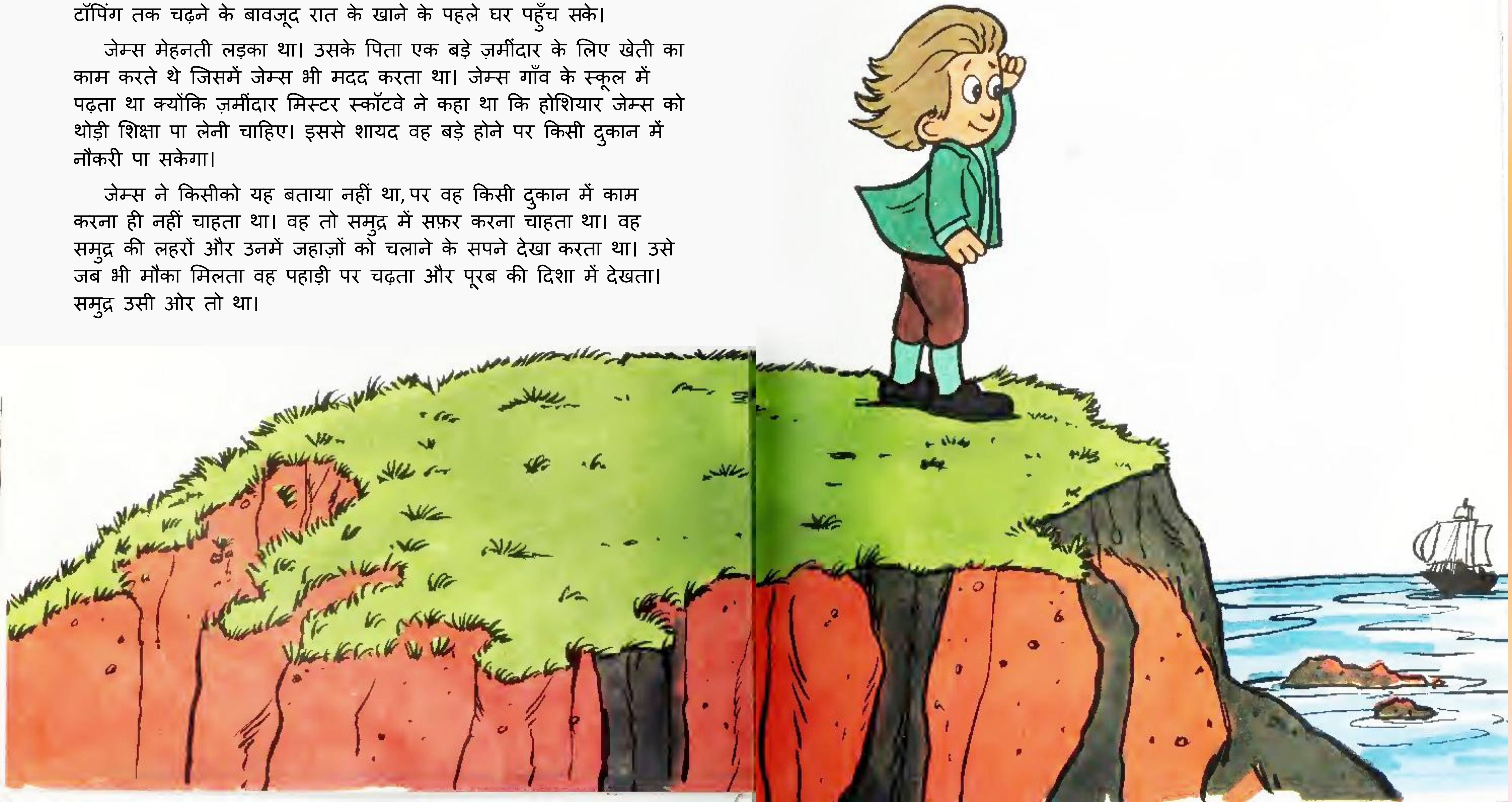

"वहाँ, उस ओर जो चमचमाता दिख रहा है," जेम्स ने खुद से कहा। "ज़रूर वह समुद्र ही होगा। काश मैं उसके पास होता। तब मैं उड़ कर वहाँ पहुँच जाता और नई जगहों और नए रोमांचों का अनुभव करता।" जेम्स ने गहरी साँस भरी। "पर शायद मुझे अपनी पूरी ज़िन्दगी यहीं गाँव में ही बितानी पड़ेगी।"

"क्यों?" एक आवाज़ ने सवाल किया। "अगर तुम जहाज़ी सफ़र करना चाहते हो तो तुम अपनी ज़िन्दगी यहाँ क्यों बिताओगे?"

जेम्स ने अगल-बगल झाँका। उसे कोई नज़र ही नहीं आया। कुछ दूर एक चट्टान पर बर्फ सा सफ़ेद गंगा-चिल्ली (सीगल), एक समुद्री पक्षी, बैठा था। उसने अपनी चमकदार आँखों से जेम्स को देखा, एक-दो बार अपने पंख फड़फड़ाए, मानो उड़ने को तैयार हो। तब पंख समेट लिए।

"मुझे जवाब नहीं दोगे क्या?" उसने पूछा।

"ओ वह तुम थे?" जेम्स ने कहा। "मैंने सोचा कि यह मेरी कल्पना है।"

"बेशक मैं ही था," गंगा-चिल्ली ने कहा। "मैंने तुम्हें कई बार यहाँ ऊपर खड़े समन्दर की ओर घूरते देखा है। तो बताओ तुम अपनी ज़िन्दगी गाँव में क्योंकर बिताओगे?"

"मैं समुद्र के सफ़र पर कैसे जा सकता हूँ," जेम्स ने निराश आवाज़ में कहा। "मैं जहाज़ के संचालन, या जहाज़ों के बारे में कुछ भी नहीं जानता हूँ। मैं तो किसी ऐसे इन्सान तक को नहीं जानता जो इस बारे में जानता हो।"

"तुम मुझे जानते हो, कम से कम अब," गंगा-चिल्ली ने कहा। "मेरा नाम सॉल्टी है। मैं हेकड़ी नहीं जताना चाहता, पर मैं समन्दर के बारे में सब जानता हूँ, जितना कोई जान सकता है।"

"और जहाज़ों के बारे में?" जेम्स ने आतुर हो पूछा।

"मैं कई जहाज़ों के गिर्द उड़ा हूँ, पर उन्हें चलाया कैसे जाता है उस बारे में मैं ख़ास नहीं जानता।" जेम्स को निराश देख सॉल्टी ने जोड़ा, "पर इस बारे में तो तुम आसानी से सीख सकते हो। पर हाँ तुम्हें साहसी भी बनना होगा।"

"साहसी?"

"हाँ," सॉल्टी बोला। "तुम्हें इतना बहादुर तो होना होगा कि तुम कुछ नया कर सको। तुम्हें कोई बैठे-बिठाए वह मौका तो देने से रहा जो तुम चाहते हो। तुम्हें मौका तलाशना होगा। अच्छा नाविक बनने के लिए बहुत कुछ जानने-सीखने की ज़रूरत होती है।"

"क्या तुम्हें लगता है कि मैं यह सब कर सकता हूँ?" जेम्स ने जानना चाहा।

"बेशक," सॉल्टी ने कहा। "अगर तुम साहस और मेहनत करो तो।"

जेम्स ने फिर से पूरब की ओर देखा और पाया कि हरी पहाड़ी पर छायाएं बड़ी होती जा रही हैं। "देर हो रही है!" वह बोला, "मुझे घर लौटना होगा।"

"मुझे भी," सॉल्टी ने कहा। उसने अपने पंख फैलाए? उन्हें धीरे से ऊपर-नीचे हिलाया, तब झटके से हवा में ऊपर उठ गया।

"क्या मैं तुम्हें आगे कभी देखूंगा?" जेम्स ने पुकार कर पूछा।

"अगर तुम साहस कर समुन्दर में आओ।" इतना कह सॉल्टी चमकीले क्षितिज की दिशा में उड़ गया।

"मैं क्या सचमें एक गंगा-चिल्ली से बात कर रहा था?" पहाड़ की ढ़लान पर से नीचे घर की ओर दौड़ लगाते जेम्स ने खुद से कहा। "लगता है यह सब मैं कल्पना ही कर रहा हूंगा। आख़िर मैं समुद्री सफ़र के बारे में इतना सोचता जो रहा हूँ।" उसके मन में संदेह बना रहा।

सॉल्टी ने जो कहा था उसे याद आया। उसने तय किया कि वह स्कूल में खूब मेहनत करेगा।

एक दिन स्कूल में मास्टर साहब ने बच्चों को दुनिया का नक्शा दिखाया।

"बाकी दुनिया की तुलना में युरोप में इतनी जगहों पर निशान क्यों लगे हैं?" जेम्स ने जानना चाहा।

"इसलिए क्योंकि दुनिया के बड़े हिस्से के बारे में कोई ज़्यादा जानता ही नहीं है। पर किसी दिन साहसी लोग जहाज़ की मदद से समुद्र का सफ़र करेंगे और यह तलाश लेंगे कि वहाँ क्या है।"

"हो सकता है कि बड़ा होने पर मैं ऐसे सफ़र पर निकल सकूं।"

"अगर तुमने अपने मन में ऐसा कुछ धारा है," मास्टर साहब ने कहा, "तो जो पाठ मैंने आज के लिए दिया है उस पर काम शुरू करो। नाविकों को बहुत बहादुर होने के साथ बहुत कुछ जानना-सीखना भी होता है।"

"हाँ, यह बात तो मैंने पहले भी सुनी है," सॉल्टी को याद करते हुए जेम्स ने सोचा।

जब जेम्स सतरह बरस का था, एक दिन मिस्टर स्कॉटवे, जेम्स परिवार के घर के सामने रुके। "अगर अपना जेम्स एक दुकान में काम करना चाहता है, तो मैंने एक अच्छे मौके के बारे में सुना है।" जेम्स यह कतई नहीं करना चाहता था, पर वह यह कहे कैसे, सोच पाता उसके पहले ही मिस्टर स्कॉटवे ने आगे कहा, "स्टैइथ्स के मिस्टर सैन्डरसन अपनी दुकान के लिए एक होनहार लड़का तलाश रहे हैं।"

स्टैइथ्स! जेम्स को दुकान में काम करने की बात सुन खास मज़ा नहीं आया था पर स्टेइथ्स के नाम ने उसे उत्तेजित कर दिया। वह मच्छीमारी का पहला बन्दरगाह था और समुद्र के रास्ते पर था। "शुक्रिया मिस्टर स्कॉटवे," वह हकलाते हुए बोला। उसने खुद से कहा, "हो सकता है कि स्टेइथ्स में मुझे समुद्री सफ़र करने का मौका मिले। हो सकता है मैं सॉल्टी से भी मिल सकूं।"

जेम्स ने मिस्टर सैन्डरसन के लिए खूब मेहनत से काम किया। वह सावधानी से कपड़े मापता, आटा तोलता, दुकान को बुहारता। और जब भी बन पड़ता वह समुद्र तट पर जाता और मछुआरों की नावों को आते-जाते देखता। वह गंगा-चिल्लियों को घूरता।

एक दिन जब जेम्स स्टेइथ्स में नावों को आते-जाते देखते और समुद्री सफ़र के ख़्वाब देखते साल भर गुज़ार चुका था, उसने एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनी।

"मैं तुम्हारे समन्दर के तट तक आने का इन्तज़ार करता रहा था," आवाज़ ने कहा। "तुम्हें इतनी देर भला क्यों हो रही है?"

जेम्स मुड़ा उसने देखा कि सॉल्टी एक चट्टान पर बैठा है।

"अरे सॉल्टी मैं नाविक तो अब भी बनना चाहता हूँ, पर बन कैसे सकता हूँ? मैं एक दुकान में जो काम करता हूँ।"

"इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम्हें हमेशा वहीं काम करते रहना होगा," सॉल्टी ने जवाब में कहा। "क्या तुमने कभी किसीको यह बताया भी है कि तुम एक जहाज़ पर काम करना चाहते हो दुकान में नहीं? मैंने पहले भी कहा था कि तुम्हें बहादुर बनना होगा। नहीं तो वह काम करने का मौका कैसे पा सकोगे जो तुम करना चाहते हो?"

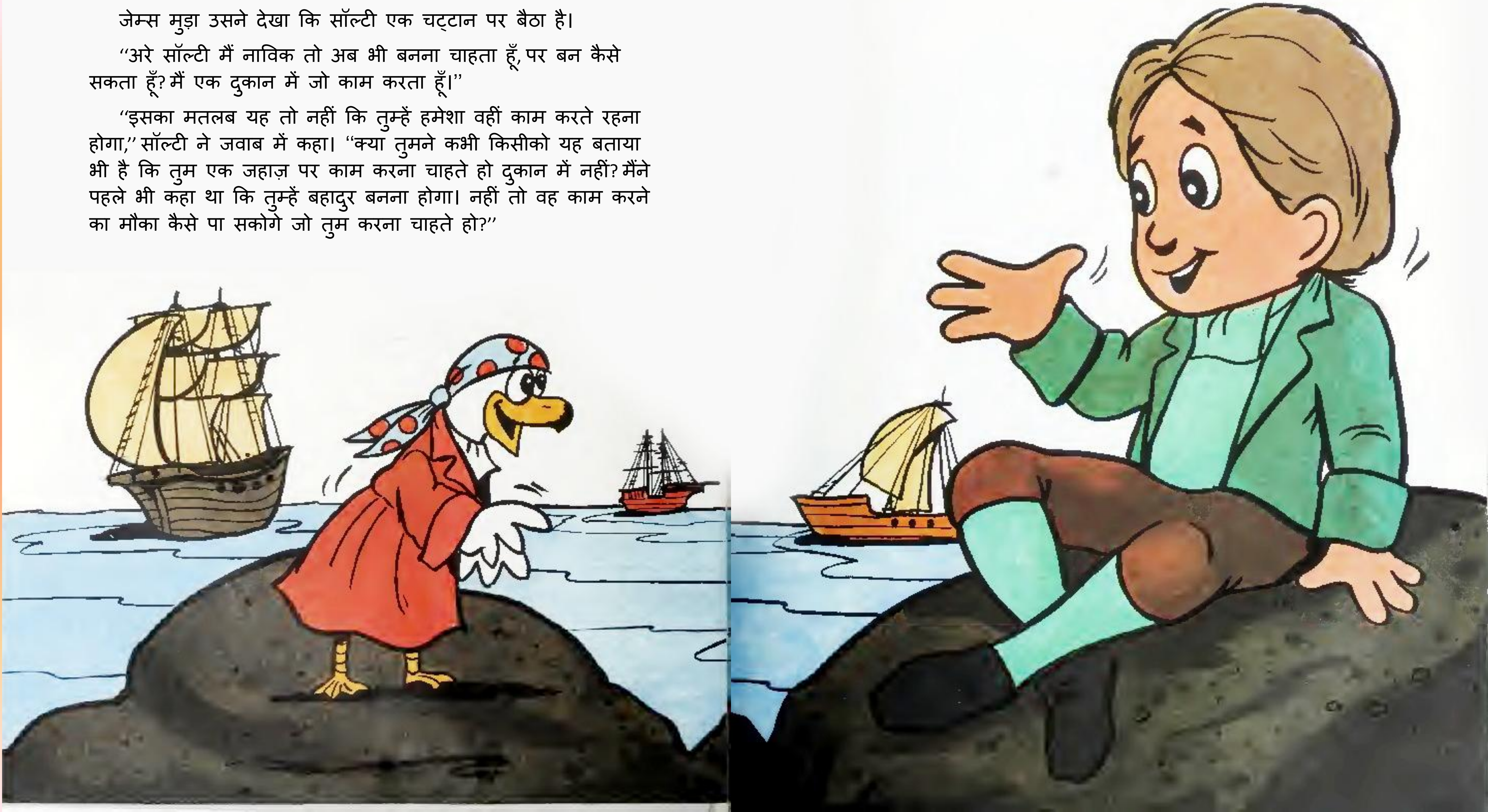

जेम्स जानता था कि सॉल्टी सही कह रहा है। "मैंने अब तक बताया तो नहीं है . . . पर जल्द ही बताऊंगा। मिस्टर सैन्डरसन कई लोगों को जानते हैं। अगर उन्हें पता होता, तो वे शायद मेरी मदद भी करते। मैं उन्हें फ़ौरन बताता हूँ।" और जेम्स ने बताया भी।

"जेम्स तुम अच्छे लड़के हो। मुझे यह अंदाज़ तो था कि तुम्हारा मन कहीं और रमा है। तो तुम नाविक बनना चाहते हो? जहाँ तक मेरा सवाल है मैं तो ठोस धरती पर महफ़ूज़ रहना पसन्द करता हूँ। पर हमें तुम्हारे जैसे हिम्मती लोगों की भी ज़रूरत है। मैं अपने दोस्त जॉन वॉकर से बात करूंगा। वे व्हिटबी के एक जहाज़ मालिक हैं।"

तो इस तरह जेम्स एक नाविक बना।

अगले आठ सालों तक जेम्स ने जॉन वॉकर और दूसरे जहाज़ मालिकों के लिए काम किया जो इंग्लैण्ड के पूर्वी तट से स्कैन्डीनेविया व बॉल्टिक सागर तक कोयला पहुँचाते थे। उसने ख़तरनाक समुद्रों में जहाज़ों को चलाने और हर मौसम में उन्हें संभालने के बारे में बहुत कुछ सीखा।

सर्दियों के मौसम में जब जहाज़ों को मरम्मत और रख-रखाव के लिए बन्दरगाहों पर ही रखा जाता था, जेम्स गणित और अन्य विषयों का अध्ययन भी करता जो नौसंचालन में उपयोगी थे।

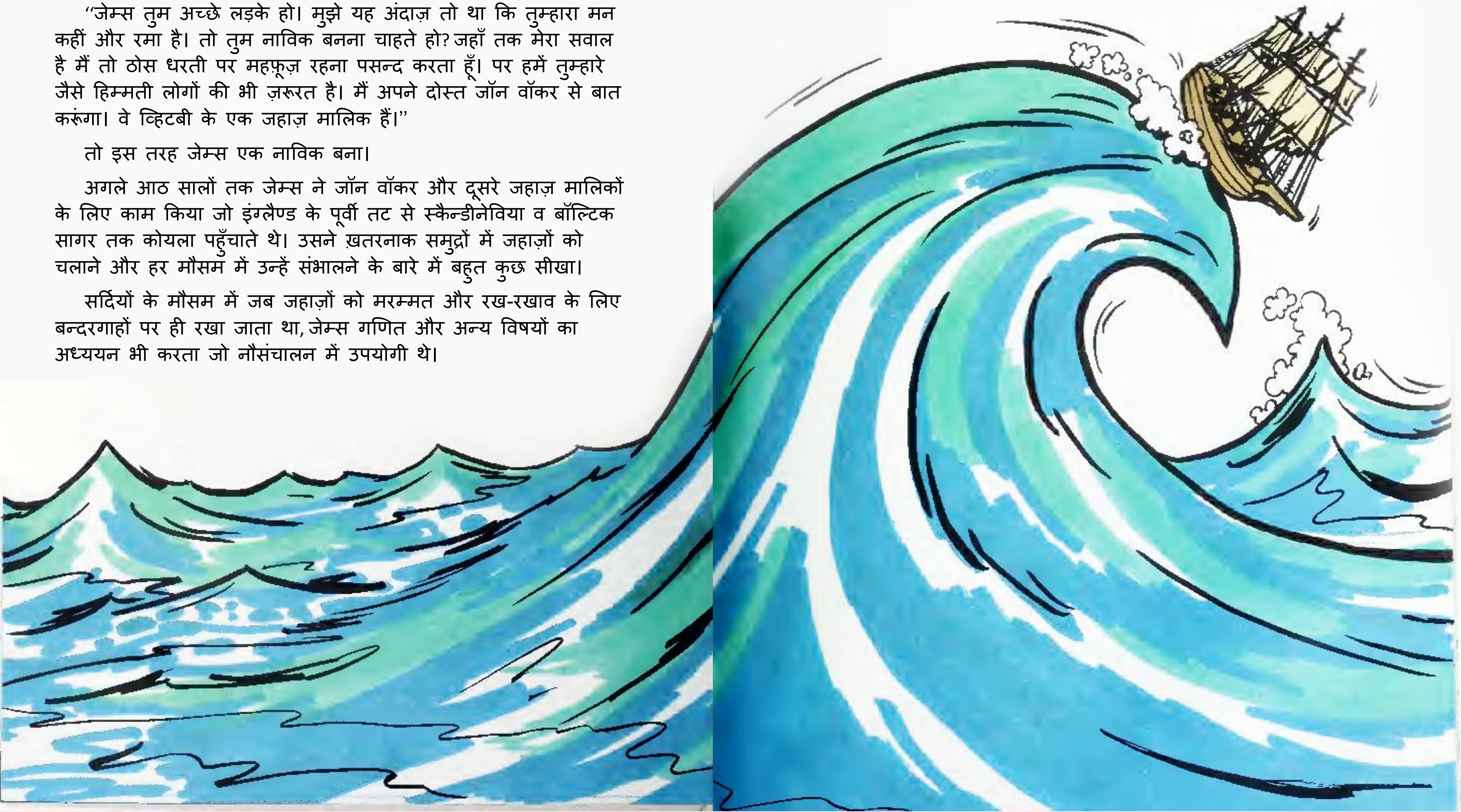

एक दिन जब उसके जहाज़ का सामान लन्दन के बन्दरगाह पर उतारा जा रहा था, जेम्स घाट के सिरे पर बैठा थेम्स नदी को घूर रहा था। अचानक सॉल्टी नीचे उतरा और पास ही माल के एक ढ़ेर पर आ टिका।

"तुमने अच्छा किया," सॉल्टी बोला। "मैं तुम्हें तट पर ऊपर-नीचे आते-जाते देखता रहा हूँ, और कह सकता हूँ कि तुमने जहाज़ संचालन के बारे में बहुत कुछ सीख लिया है। लगता है मिस्टर वॉकर भी यही सोचते हैं क्योंकि उन्होंने अपने जहाज़ फ्रैंडशिप का मेट (कप्तान का सहायक) बनाया है।"

"इतना ही नहीं," जेम्स ने जवाब में कहा। "वे अब तो मुझे कप्तान बनाना चाहते हैं।"

"यह तो ओर भी बढ़िया है," सॉल्टी बोला। "तो फिर तुम यहाँ अकेले, इतने गंभीर क्यों बैठे हो?"

"मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि मैं कोयले के व्यापार से जुड़ा रहना चाहता हूँ या नहीं। मैं दरअसल दुनिया देखना चाहता हूँ, नई-नई चीज़ें सीखना चाहता हूँ। सो सोच रहा हूँ कि नौसेना में भर्ती हो जाऊं।"

"नौसेना!" सॉल्टी चीखा। "यह तो एक साहस भरा कदम होगा। तुम्हें पता है ना, नौसेना में ज़िन्दगी कठिन होती है। और फिर वहाँ तुम्हें एक आम नाविक के दर्जे से शुरुआत करनी होगी।"

"जानता हूँ," जेम्स बोला। "पर इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच तनाव के कारण नौसेना में विस्तार किया जा रहा है। हो सकता है कि मैं तेज़ी से तरक्की कर सकूं।"

"शायद सच कह रहे हो," सॉल्टी ने कहा। "मैंने तुम्हें साहसी बनने को कहा था और तुम सचमें मेरी सलाह मान रहे हो।"

जेम्स नौसेना में दाखिल हुआ और उसने सचमें तेज़ी से तरक्की की। दो सालों के अन्दर ही वह इंग्लैण्ड की शाही नौसेना के जहाज़ों में से एक 'मास्टर' बन गया। मास्टर के रूप में जहाज़ का नौसंचालन और प्रबंधन उसकी ज़िम्मेदारी थी। सिवा इसके कि जहाज़ का कप्तान सीधे कोई हुक्म न दे।

जल्द ही *पैम्ब्रोक* के मास्टर के रूप में जेम्स उत्तरी अमरीका गए। उन्हें यह देख बड़ी खुशी हुई कि उसके जहाज़ का पीछा कर रहे गंगा-चिल्लियों के साथ सॉल्टी भी था।

"तुम्हें अपनी बहादुरी बनाए रखनी होगी," एक दिन सॉल्टी ने उससे कहा। "सुना है फ्रांस और इंग्लैण्ड जंग लड़ रहे हैं।"

"हाँ, बड़े दुख की बात है," जेम्स ने कहा। "लगता है शाही बेड़े को सेंट लॉरेंस तक जाना होगा ताकि क्यूबैक में जो सेना है उसकी मदद की जा सके।"

और ठीक यही हुआ भी जब वे जहाज़ में सेंट लॉरेंस नदी में काफ़ी आगे तक बढ़ चुके थे, जहाज़ के कप्तान ने जेम्स से बात की। "यहाँ तकरीबन दो सौ जहाज़ क्यूबैक तक की बाकी दूरी पार करने का इन्तज़ार कर रहे हैं। पर नदी का यह हिस्सा बेहद ख़तरनाक है। खोजियों ने बताया है नदी पार करने का जो सुरक्षित रास्ता है, उसका संकेत देने वाले तैरते निशान भी हटा दिए गए हैं।"

"सर, ऐसे में," जेम्स ने कहा, "हमें रास्ते का नक्शा फिर से बनाना होगा और उस पर तैरने वाले निशान लगाने होंगे।"

"तुम्हें जितनी नावें और नाविक चाहिए ले जाओ," कप्तान ने कहा।

अगले कई सप्ताह जेम्स कुक और उनके साथी इस काम में जुटे रहे। वे अधिकतर रात के अंधेरे में, गोली-बारी के बीच काम करते। अंततः काम पूरा हुआ और ब्रितानी बेड़े के सभी जहाज़ दुनिया का सबसे ख़तरनाक समुद्री इलाका माना जाने वाले हिस्से को पार कर सके।

उन सप्ताहों में जल मार्ग का जो नक्शा जेम्स कुक ने बनाया था उसका उपयोग अगले सौ वर्षों से भी अधिक समय तक किया जाता रहा।

एक दिन सुबह-सुबह जेम्स डैक पर निगरानी कर रहे नाविकों को देखने आए। उन्होंने सॉल्टी को रेलिंग पर बैठा पाया।

"पिछली बार की हमारी मुलाक़ात के बाद तुम कई तरह की नई चीज़ें करते रहे हो," जेम्स के दोस्त ने कहा।

"मैंने बहुत कुछ सीखा है। मैं खगोल विज्ञान का अध्ययन करता रहा हूँ, और मेरा परिचय एक ऐसे शख़्स से हुआ है जो मुझे सर्वेक्षण कर नक्शे बनाना सिखाता रहा है। पर ये मुझे बहादुरी के काम तो नहीं लगते।"

"साहसी बनने के कई तरीके होते हैं," साल्टी ने कहा। "ख़तरनाक परिस्थितियों में अपना काम करते जाना भी एक तरीका है। साथ ही ऐसी चीज़ें सीखना जिनकी तुमसे किसी ने उम्मीद ही नहीं की हो, यह दूसरा तरीका है।"

"हो सकता है," जेम्स ने जवाब दिया। "पर अब मुझे नई जगहें और आसमान में नए ग्रह-नक्षत्र चाहिए जिन्हें मैं नक्शों में शामिल कर सकूं।"

जेम्स जल्द ही अपनी पहली मुराद पा सके। उन्हें एक जहाज़ का ज़िम्मा सौंपा गया ताकि वे न्यूफाउन्डलैण्ड के तट का नक्शा बना सकें। अगले पाँच वर्षों तक उन्होंने अपनी गर्मियाँ उस इलाके का सर्वेक्षण करते और उसके नक्शे बनाते और सर्दियाँ इन नक्शों को प्रकाशन के लिए तैयार करते बिताए।

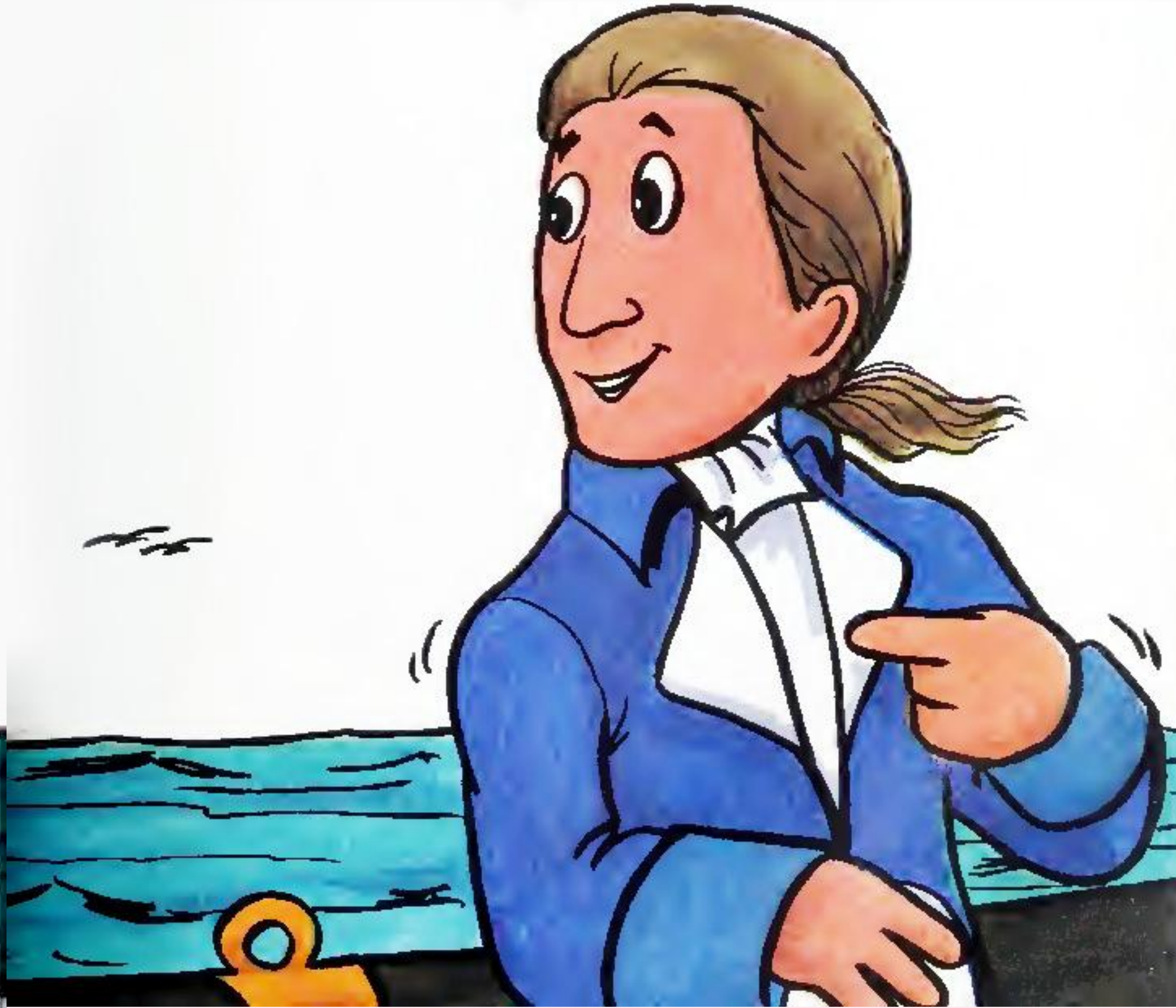

इंग्लैण्ड में गुज़ारे समय में एक बार जेम्स की मुलाक़ात एलिज़ाबैथ बैटस् नामक युवती से हुई। अब तक जेम्स अपने अध्ययन और समुद्री सफ़रों में इतने उलझे रहे थे कि उन्होंने अपने घर-परिवार के बारे में सोचा ही नहीं था। पर चमकती आँखों वाली एलिज़ाबैथ ने यह बदल दिया।

"मैं उससे शादी करना चाहता हूँ सॉल्टी," जेम्स ने एक दिन अपने दोस्त से कहा। "पर मैं समुद्र को छोड़ भी नहीं सकता। इसका मतलब होगा कि मैं महीनों तक उससे दूर रहूँगा। इन हालातों में वह मेरा प्रस्ताव मानेगी इसकी क्या उम्मीद है?"

"अगर तुम उससे पूछते नहीं तो उम्मीद की भी नहीं जा सकती," सॉल्टी ने दो टूक जवाब दिया। "जैसा मैं तुमसे कहता रहा हूँ . . ."

"मुझे मालूम है तुम क्या कहोगेः साहसी बनो। और तुम सही ही कहते हो। मैं आज रात ही उससे पूछूंगा।"

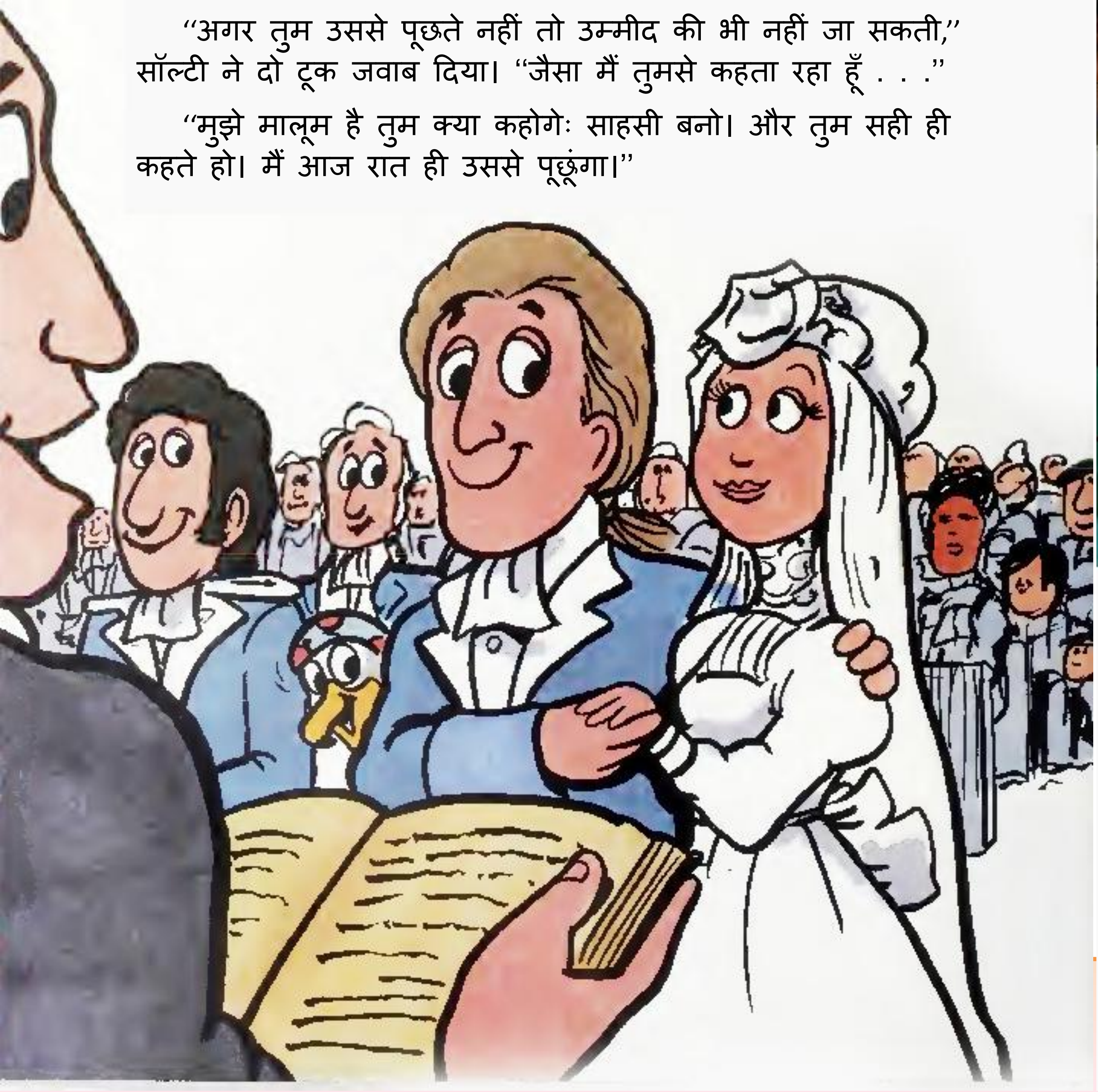

पता चना कि एलिज़ाबैथ भी जेम्स से उतना ही प्यार करती थी और जेम्स की तरह साहसी भी थी। उसने बेझिझक "हाँ" कहा और दोनों की शादी हो गई।

जेम्स ने लन्दन के पास ही एक गाँव माइल एण्ड में एक घर ख़रीदा और जल्द ही सफ़र से घर लौटने के लिए उसके पास अपनी पत्नी के अलावा एक बेटा भी था।

इन उत्तेजक घटनाओं के दौरान जेम्स की रुचि खगोल विज्ञान में कायम रही। 1766 में उन्होंने सूर्यग्रहण देखा और अपनी अवलोकन रपट रॉयल सोसायटी को भेजी। यह संस्था वैज्ञानिक शोध को समर्पित थी।

"तीन वर्ष बाद सूर्य ग्रहण से भी ज़्यादा उत्तेजक कुछ होने वाला है," एक दिन जेम्स ने सॉल्टी से कहा। "तब शुक्र ग्रह धरती और सूरज के बीच से गुज़रेगा। पर इसे देखना सिर्फ़ दक्षिणी प्रशान्त महासागर से ही संभव है। सो मैं तो इसे देख ही नहीं सकूंगा।"

"क्या तुम्हें इस बात पर भरोसा है?" सॉल्टी ने पूछा। "तीन साल पहले तुम क्या यह सोच भी सकते थे कि तुम खगोलीय अवलोकन करोगे? याद रखो और हिम्मत बनाए रखो! कौन जाने आगे क्या हो?"

दरअसल रॉयल सोसायटी शुक्र के गुज़रने का अवलोकन करने के लिए एक दल को ताहिती भेजने की योजना बना रही थी। यह अभियान दक्षिणी प्रशान्त महासागर में एक विशाल महाद्वीप की तलाश भी करने वाला था, जिसके होने पर कई लोगों का विश्वास था।

इस अभियान का नेतृत्व करने के लिए सोसायटी को एक साहसी और अनुभवी नाविक चाहिए था जो हर मौसम में जहाज़ का संचालन कर सके और अनजान समुद्री तटों पर सावधानी और समझदारी से बढ़ सके। जो नए खोजे देशों व स्थानों के नक्शे बना सके और जो एक काबिल खगोल विज्ञानी भी हो।

तुम क्या सोचते हो कि उन्होंने किसे चुना?"

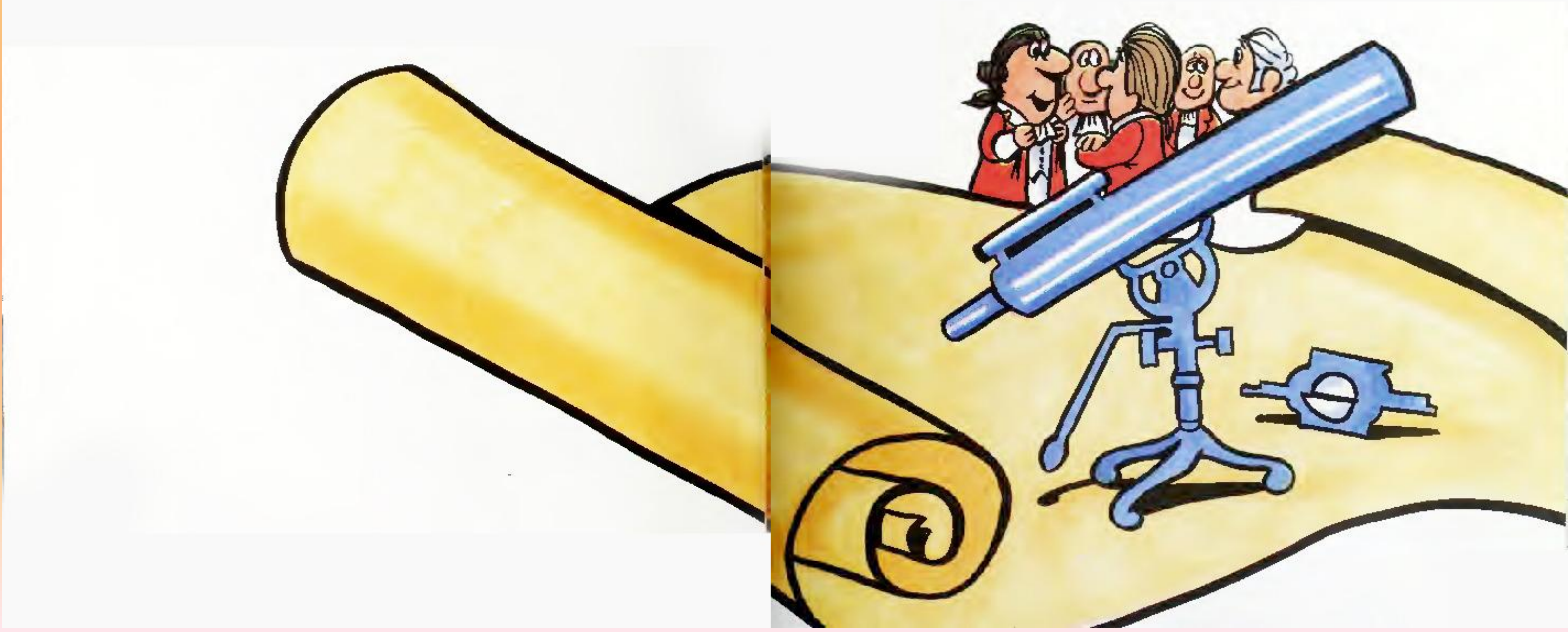

उन्होंने एक ऐसे इन्सान को चुना जो यह सब कर सकता थाः जेम्स कुक को!

"मैंने कहा था ना कि इतना अध्ययन तुम्हें रहस्य-रोमांच की ओर ले जाएगा," सॉल्टी ने जेम्स से तब कहा जब जेम्स अपने अभियान के लिए जहाज़ को तैयार कर रहा था। जहाज़ का नाम था *एन्डेवर* । "इस बार तो तुम्हें सचमें बहुत साहसी होना होगा। मैं तक प्रशान्त महासागर के बारे में कुछ ख़ास नहीं जानता।"

"इस बार के रोमांचक सफ़र में मुझे काफ़ी मदद मिलने वाली है," जेम्स ने कहा। "रॉयल सोसायटी अभियान में ऐसे लोगों को भी साथ भेज रही है जो पेड़-पौधों और जानवरों के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। इसके अलावा एक खगोल विज्ञानी, और हम जो कुछ भी खोजें उसके चित्र बनाने के लिए चित्रकार भी होंगे। साथ ही एक चिकित्सक और एक बकरी भी। हमें ताज़ा दूध भी मिल सकेगा।"

"मुझे खुशी है कि मैं साथ उड़ सकूंगा?" सॉल्टी ने कहा, "क्योंकि *एन्डेवर* में काफ़ी भीड़-भाड़ होगी।" और भीड़ थी भी। पर जेम्स आश्वस्त थे क्योंकि जहाज़ मज़बूत, चौड़ा, कोयले से चलने वाले जहाज़ों में एक था। वैसा जिसमें बैठ वे पहले-पहल व्हिटबे से निकले थे। वे जानते थे कि *एन्डेवर* मज़बूत छोटा जहाज़ था जो तेज़ तो नहीं चलता था पर समुद्र में दूर तक सफ़र करने के काबिल था।

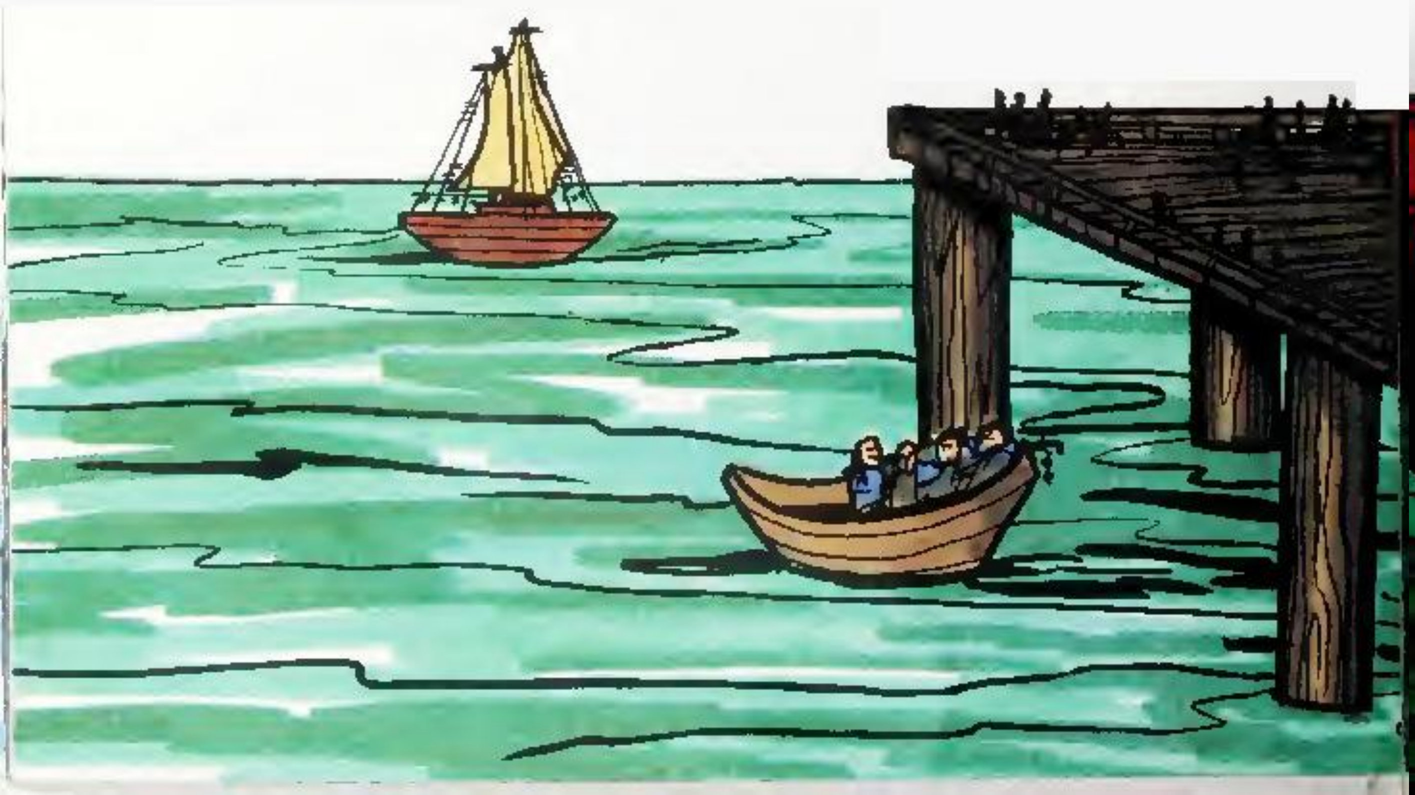

अटलांटिक महासागर के पार दक्षिण अमरीका के पूर्वी तट तक का सफ़र बिना बाधाओं के आराम से हुआ। वैज्ञानिक जब संभव हुआ तटों पर उतरे और नई किस्मों के पेड़-पौधों और जानवरों के नमूने इकट्ठा करने में व्यस्त रहे।

एक दिन एक मेट (सहायक) जेम्स के पास आया और बोला, ''कर्मीदल के लोग खाने की शिकायत कर रहे हैं। वे अब और सावरक्राउट (पत्तागोभी का ख़मीरी सलाद) नहीं खाना चाहते।''

''खैर उन्हें यह खाना तो होगा। मैंने लम्बे सफ़र में नाविकों को स्कर्वी (विटामिन सी की कमी) का रोगी बनते देखा है। यह ताज़े फल और सब्ज़ियाँ न खाने से होता है। इसका विकल्प है सावरक्राउट जिसे हम साथ ले जा सकते हैं।''

मेट ने सिर हिलाया। ''मुझे डर है कि उन्हें जबरन खिलाने का एक ही तरीका है, न खाने पर सज़ा देना।''

''अगर करना पड़े तो यह भी करूंगा। पर हम उन्हें कुछ समय देंगे। इस बीच सभी अफ़सरों को कहना पड़ेगा कि वे हर खाने के दौरान दूसरी बार सावरक्राउट मांगें और बड़े चाव से उसे खाएं।''

''सभी अफ़सरों को?'' मेट ने पूछा।

''हाँ, सभी अफ़सरों को!'' जेम्स ने दोहराया। ''और याद रखें कि उन्हें चाव दिखाते हुए खाना है।''

यह तरकीब काम कर गई। जल्द ही सभी कर्मी इतना सावरक्राउट खाने लगे कि जेम्स को उस पर राशन लगा उसकी मात्रा तय करनी पड़ी।

जनवरी 1769 में जेम्स कुक *एन्डेवर* को टिएरा डेल फ्यूगो टापू में प्रवेश करने के स्थान तक ले आए।

"हम जल्द ही केप हॉर्न के पास होंगे," जेम्स ने ज़ैकरी हिक्स से कहा, जो उनके मेट थे। "यह सफ़र इतना सफल रहा है कि मैं इसे 'बे ऑफ गुड सकसेस' (सफलता की खाड़ी) नाम दूंगा। हो सकता है कि इससे हमारा बाकी सफ़र भी सफल हो।

जेम्स जानते थे कि केप हॉर्न के गिर्द चक्कर लगाना जोखिम भरा काम था। उस जगह समुद्र में विशाल लहरें और ख़तरनाक हवाएं थीं। वे शान्त खाड़ी में झिझकते ठहरे, तब खुले समुद्र की ओर मुड़े।

"तुम्हें बहादुर बनना होगा जेम्स और जहाज़ का सावधानी से नौसंचालन करना होगा," साल्टी ने सलाह दी। "क्योंकि मौसम के बारे में तुम कुछ कर ही नहीं सकते।"

किस्मत ने जेम्स और *एन्डेवर* का साथ दिया। शान्त समुद्र ने जहाज़ को धीमी गति से आगे बढ़ने दिया और जेम्स उस ख़तरनाक जल-मार्ग का नक्शा बना पाए।

इंग्लैण्ड छोड़ने के आठ महीनों बाद *एन्डेवर* ताहिती पहुँचा। न केवल जहाज़ सही-सलामत था, बल्कि एक भी नाविक बीमार नहीं हुआ था। पर वे सावरक्राउट से उकता चुके थे। सो वे ताहिती के बाशिन्दों से ताज़े फल और सब्ज़ियाँ पा बेहद खुश हुए।

अभियान ने तकरीबन तीन महीने ताहिती में बिताए ओर रॉयल सोसायटी के खगोलशास्त्री ने शुक्र को गुज़रते देखा। अन्य वैज्ञानिकों ने अनेक नमूने इकट्ठा किए और सभी ने उस खूबसूरत टापू का आनन्द लिया। जब लौटने का वक़्त हुआ तो जो कर्मीदल ताहिती के वासियों को छोड़ कर जाना ही नहीं चाहता था। स्थानीय निवासी भी इंग्लैण्ड से आए लोगों के दोस्त बन चुके थे और नहीं चाहते थे कि वे लौटें।

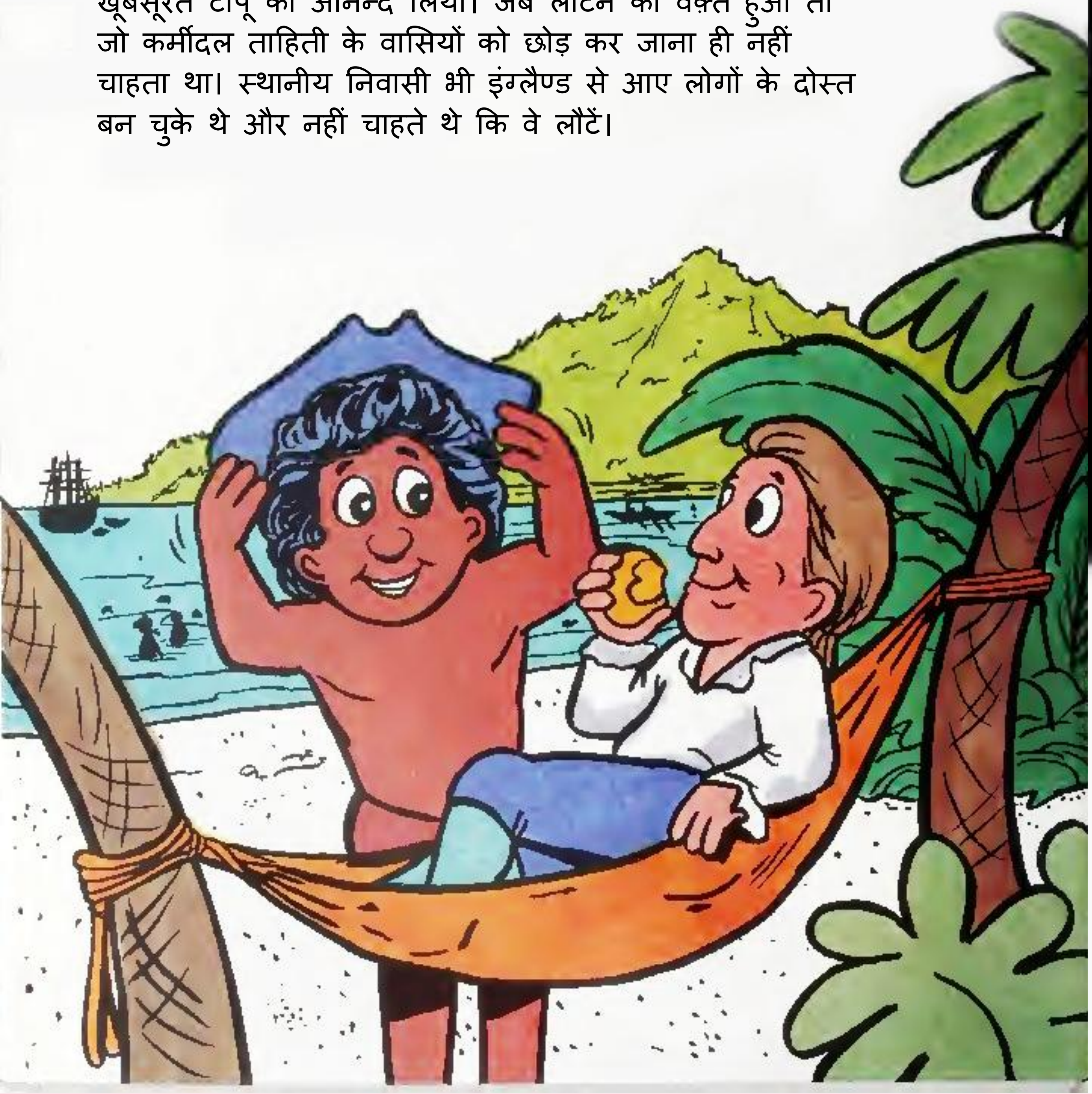

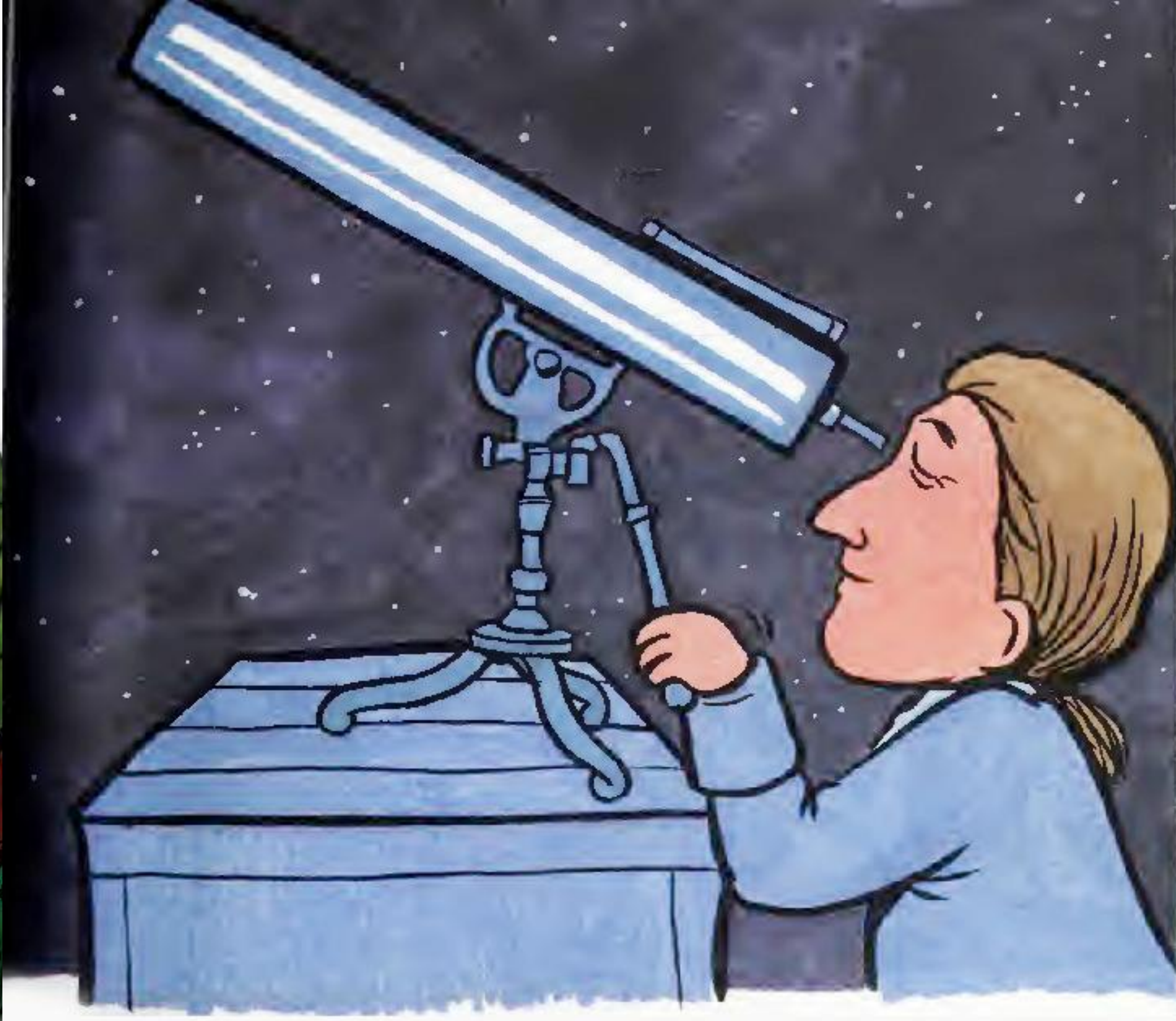

“सभी नाविक यहाँ बड़े खुश रहे हैं,” जेम्स ने कहा। “क्या तुम सोचते हो कि वे भागने की कोशिश करेंगे?”

“नहीं सर, मुझे नहीं लगता,” ज़ैकरी ने जवाब दिया। “वे आपको समर्पित हैं। वे चाहे जितना भी रुकना चाहते हों, आप जब चलने को कहेंगे, वे चल पड़ेंगे।”

“उम्मीद है तुम ठीक कह रहे होगे क्योंकि हमें अपना अभियान जारी रखना है। हो सकता है कि छानबीन करने पर हम कोई बड़ा महाद्वीप और दूसरे टापुओं को खोज निकालें और नक्शे पर दर्शा सकें।”

ज़ैकरी सही कह रहे थे। अगली सुबह *एन्डेवर* अज्ञात समुद्र में बढ़ चला। ताहिती का एक आदिवासी मुखिया भी, जिसका नाम तुपिया था, उनके साथ हो लिया।

"मैं पश्चिम और दक्षिण के द्वीपों के बारे में बहुत कुछ जानता हूँ," उसने कहा। "मैं वहाँ बसे लोगों की भाषाएं बोल सकता हूँ। मैं आप लोगों की मदद कर सकता हूँ।"

"क्या दक्षिण में कोई बड़ा महाद्वीप है?" जेम्स ने पूछा।

"मेरे पिता महान खोजी थे। वे सुदूर दक्षिण तक गए थे। पर उन्हें वहाँ सिर्फ टापू ही दिखे थे।"

"फिर भी हमें पुख़्ता जानकारी पा लेनी चाहिए," जेम्स ने कहा।

अभियान दल दक्षिण में तकरीबन 1500 मील तक गया, पर उन्हें ज़मीन नहीं मिली। मौसम भी बड़ा ख़राब था। जहाज़ और उसके पालों की लगातार मरम्मत करते रहनी पड़ी। कर्मीदल थक कर चूर हो गया।

एक दिन जेम्स को डेक पर बने केबिन की आड़ में सॉल्टी बैठा दिखा। "तो अब क्या सॉल्टी?" जेम्स ने अपने दोस्त से पूछा। "हम बढ़ते रहे हैं, चलते रहे हैं पर कुछ भी पा नहीं सके हैं।"

"अगर दक्षिण में कुछ नहीं मिला तो साहस कर अपनी दिशा बदलो," सॉल्टी ने सुझाया।

सो जेम्स ने *एन्डेवर* को पश्चिम की ओर मोड़ा। तीन लम्बे सप्ताहों तक यात्रा करने के बाद एक सुबह मस्तूल पर निगरानी कर रहे नाविक की आवाज़ सुनाई दी।

"आगे ज़मीन है।"

वे न्यूज़ीलैण्ड पहुँच चुके थे। जेम्स ने इस अंतरीप को 'यंग निक्स हैड' का नाम दिया। उस नाविक सम्मान में जिसने उसे सबसे पहले देखा था।

न्यूज़ीलैण्ड की खोज 126 वर्ष पहले हो चुकी थी। पर उसके बाद किसी भी युरोप वासी ने जहाज़ से उसके गिर्द चक्कर लगाने की कोशिश नहीं की थी। जेम्स कुक ने यह जानने की कोशिश की कि वह द्वीप है या किसी महाद्वीप का हिस्सा है।

जब ऐन्डेवर न्यूज़ीलैण्ड के पूर्वी तट से उसके दक्षिणी छोर की ओर बढ़ा तेज़ हवाएं पूरे ज़ोर से जहाज़ को पीछे धकेलने लगीं। जेम्स ने साचा कि समुद्र के शान्त होने तक किसी सुरक्षित खाड़ी में जहाज़ को रोकें।

जब वे लहरों के थपेड़ों को जहाज़ से टकराते देख रहे थे, उन्हें लगा कि सॉल्टी अपने पंख पसारे हवाओं के साथ उड़ रहा है।

हवा की गर्जना के बीच जेम्स ने अपने दोस्त को, ''साहस बनाए रखना!'' कहते सुना। ''अगर तुम अब भी इन्तज़ार करते रहे तो शायद काम कभी पूरा न कर सको!''

दो सप्ताह बाद क्रिसमस के दिन *एन्डेवर* ने न्यूज़ीलैण्ड के ऊपरी सिरे को पार किया और तब न्यूज़ीलैण्ड के उत्तरी और दक्षिणी टापुओं का चक्कर लगा लिया। जेम्स कुक ने यह सिद्ध कर दिया कि न्यूज़ीलैण्ड किसी बड़े महाद्वीप का हिस्सा नहीं है। उन्होंने पूरे तट का नक्शा बनाया और सैकड़ों खाड़ियों, नदियों और प्रवेश खाड़ियों को नाम दिए। इनमें से कई नामों का उपयोग आज भी किया जाता है।

"हम अपना काम पूरा कर चुके हैं," जेम्स ने जहाज़ के अफ़सरों को कहा। "हम अब घर लौट सकते हैं, या फिर ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट की छानबीन कर सकते हैं। आप सबकी क्या राय है?"

अफ़सरों को पता था कि जेम्स क्या करना चाहते हैं। वे सब एक अर्से से घर से दूर रह चुके थे। इसके बावजूद उनमें से एक भी झिझका नहीं।

"बेशक हमें आगे जाना चाहिए," ज़ैकरी हिक्स ने कहा। "घर तो कुछ महीनों बाद भी वहीं रहेगा, पर हम यहाँ फिर कभी होंगे या नहीं यह कौन जानता है?"

जेम्स कुक के साहस से प्रेरित हो दूसरों को भी लगने लगा था कि नई खोज कर पाने का कोई भी मौका गंवाना नहीं चाहिए। जब वे ऑस्ट्रेलिया के तट से ऊपर की ओर बढ़े मौसम अच्छा था। कई खाड़ियाँ और द्वीप थे जिन्हें नक्शे में शामिल करना था, उन्हें नाम देने थे। एक खाड़ी के पास उन्हें नए किस्म के पेड़-पौधे मिले कि जेम्स ने उसे 'बॉटनी बे' (वनस्पति खाड़ी) का नाम दिया।

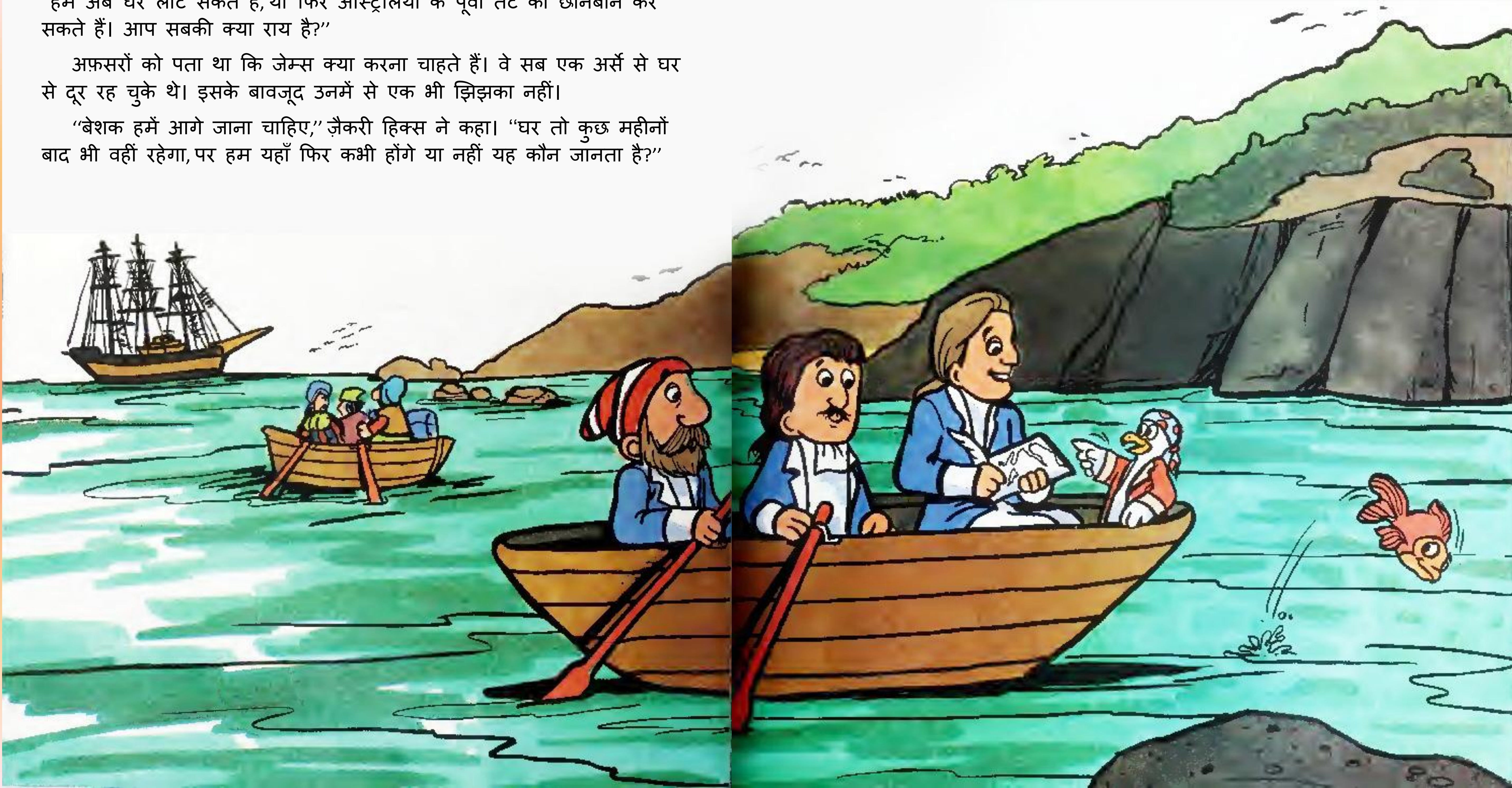

तब एक रात ज़ोरदार चरमराहट हुई जिसने *एन्डेवर* को आगे से पीछे तक हिला दिया। दरअसल जहाज़ मूंगे की बड़ी चट्टान पर चढ़ आया था। जहाज़ पूरी तरह अटक चुका था। उसके तल में हुए छेद से पानी घुसने लगा था। स्थिति विकट थी और तट क़रीब बीस मील दूर था। इतनी नावें नहीं थीं कि सभी को सुरक्षित निकाला जा सके।

जेम्स ने एक साहसी योजना बनाई। जितनी अतिरिक्त सामग्री थी उसे फिंकवाया। तब नाविकों से लंगरों को कुछ इस तरह डलवाया जिससे ज्वार आने पर जहाज़ को रस्सियों की मदद से मूंगे की चट्टान पर से हटाया जा सके।

जब वे ज्वार का इन्तज़ार कर रहे थे, सॉल्टी आया और रेलिंग पर टिक कर बैठ गया। "इस बार तो भारी परेशानी में फंसे हो," उसने कहा। "तुम्हारी योजना को अमल में लाने के लिए तुम्हें हिम्मत की ज़रूरत होगी। क्योंकि जब जहाज़ चट्टान पर से हटेगा उसके पेंदे में छेद होगा।"

"जानता हूँ," जेम्स ने कहा। "पर जब वह पानी में तैर उठेगा हम ठीक ही रहेंगे।" और *एन्डेवर* सच में तैरा। हुआ यों कि मूंगे की चट्टान का एक हिस्सा जो जहाज़ में घुसा था वह टूट गया, उसने पेंदे के छेद को काफ़ी हद तक भर दिया। जेम्स ने नाविकों से कहा कि वे पाल की मदद से छेद को पूरी तरह भर दें।

जब वे तट की ओर बढ़ रहे थे एक सहायक ने पूछा "अगर पेंदे की मरम्मत नहीं हो सकी तो?"

"तब हम उसे पूरी तरह खोल देंगे और उसी लकड़ी से कुछ छोटा जहाज़ बना लेंगे," जेम्स ने बहादुरी से जवाब दिया।

जहाज़ के कुशल बढ़ई और लुहारों ने उस छेद की मरम्मत कर दी और कुछ ही सप्ताहों बाद *एन्डेवर* घर के लम्बे सफ़र पर निकल पड़ा।

बदकिस्मती से ईस्ट बटाविया में जहाज़ को मरम्मत के लिए फिर से रुकना पड़ा। यह बन्दरगाह ऊष्णकटिबंधीय रोगों से भरा था। कर्मीदल के कई सदस्य जो पूरे सफ़र के दौरान स्वस्थ रहे थे यहाँ बीमार पड़े और उनमें से कुछ की मौत हो गई।

"घर का सफ़र इस तरह शुरू करना दुखद है," जेम्स ने सॉल्टी से कहा।

"फिर भी घर पहुँच कर तुम लोगों को स्कर्वी से बचाव के बारे में कुछ बता सकोगे," सॉल्टी ने दिलासा देते कहा।

"क्या वे मेरी बात पर ध्यान देंगे? आख़िर मैं महज नाविक ही तो हूँ।"

"अगर तुम हिम्मत धर वह सब बताओ जो तुमने किया, और जिसे उन्हें भी करना चाहिए, तो वे ज़रूर मानेंगे।"

"मैं ज़रूर अपना अनुभव साझा करूंगा," जेम्स ने वादा किया।

इंग्लैण्ड छोड़ने के दो वर्ष और ग्यारह महीनों बाद *एन्डेवर* घर लौटा। जेम्स को खुशी हुई कि एलिज़ाबैथ दोनों बेटों के साथ माइल एण्ड से उनसे मिलने आई। सफ़र के दौरान जेम्स जब संभव हुआ था ख़त लिखते रहे थे। अब उनका नन्हा जेम्स तकरीबन आठ का और नैथेनियल छह का हो चुका था। उन दोनों के मन में पिता के रोमांचक सफ़र के बारे में तमाम सवाल थे।

''क्या तुम्हें तब डर नहीं लगा जब जहाज़ में पानी भरने लगा था?''

''तुमने लोगों से दोस्ती कैसे की जब दोनों ही एक-दूसरे की भाषा नहीं जानते थे?''

''मुझे उस समय के बारे में बताओ जब . . .?''

''जब मैं बड़ा हो जाऊंगा क्या मैं भी तुम्हारी तरह नाविक बन सकूंगा?''

जेम्स हंसे और उन्होंने उनके सारे सवालों के जवाब दिए। जब वे आख़िरी सवाल पर आए वे कुछ गंभीर हो गए। ''बहुत पहले जब मैं तुम से ज़्यादा बड़ा नहीं था, मेरे एक दोस्त ने बताया था कि अगर मैं नाविक बनना चाहता हूँ तो मुझे क्या करना होगा। उसने कहा था, 'साहसी बनो' और तब 'जो कुछ सीख सकते हो सीखो'। यह सलाह अच्छी थी। अगर तुम भी यह मानो तो किसी दिन मेरी तरह नाविक बन सकोगे।''

और भी बहुत लोग थे जो अभियान के बारे में सुनना-जानना चाहते थे। रॉयल सोसायटी के सदस्य, रॉयल नौसेना के लोग और आम जनता अभियान की खोजों से उत्तेजित थे। जो लोग नौविद्या के जानकार थे वे जेम्स कुक को एक महान खोजी और नौसंचालक (नैविगेटर) मानते थे।

घर लौटने के एक साल और एक दिन बाद जेम्स एक दूसरे जहाज़ *रेस्योलूशन* के डेक पर खड़े थे। सॉल्टी पास ही एक रेलिंग पर आ बैठा। ''एक और अभियान पर निकल रहे हो?'' उसने पूछा।

''हाँ,'' जेम्स ने जवाब दिया। ''कुछ लोगों का मानना है कि दक्षिण में ज़रूर एक बड़ा महाद्वीप होगा। हम उसे तलाशने जा रहे हैं।''

''क्या तुम्हें लगता है कि सचमें कोई महाद्वीप होगा?''

''हो या न हो उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं तो जो भी मिले उसे खोजना चाहता हूँ। मैं दक्षिण में जितनी दूर हो सके अपने जहाज़ को ले जाना चाहता हूँ।''

''इसके लिए तुम्हें अपना पूरा साहस चाहिए होगा। और मेरा भी। दक्षिणी समुद्र दोस्ताना नहीं कहलाए जा सकते,'' इतना कह सॉल्टी ने अपने पंख फड़फड़ाए और हवा में ऊपर उठ गया।

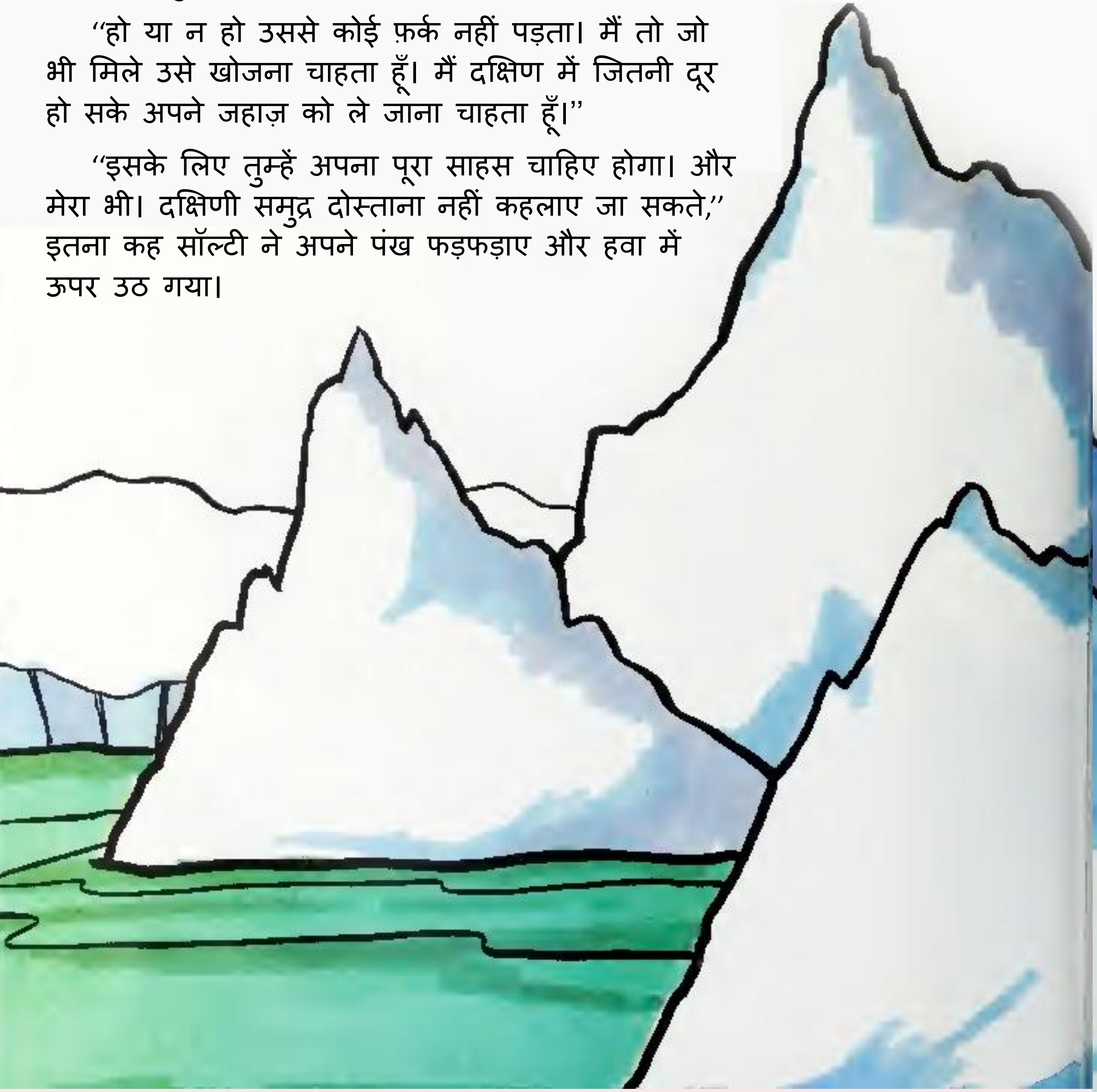

सॉल्टी ने सही कहा था। जहाज़ से सुदूर दक्षिण में जाने का मतलब था बर्फ़ से भरे समुद्र में जाना। महीनों तक जहाज़ के रस्से और पाल बर्फ़ से अकड़े रहे। महीनों तक नाविकों ने बाहर बर्फ़ीली हवाओं का और अन्दर नम और सर्द केबिनों को झेला। और महीनों तक जेम्स ने अपना अधिकतर समय डेक पर बिताया ताकि जहाज़ विशाल हिमखण्डों से न टकरा जाए।

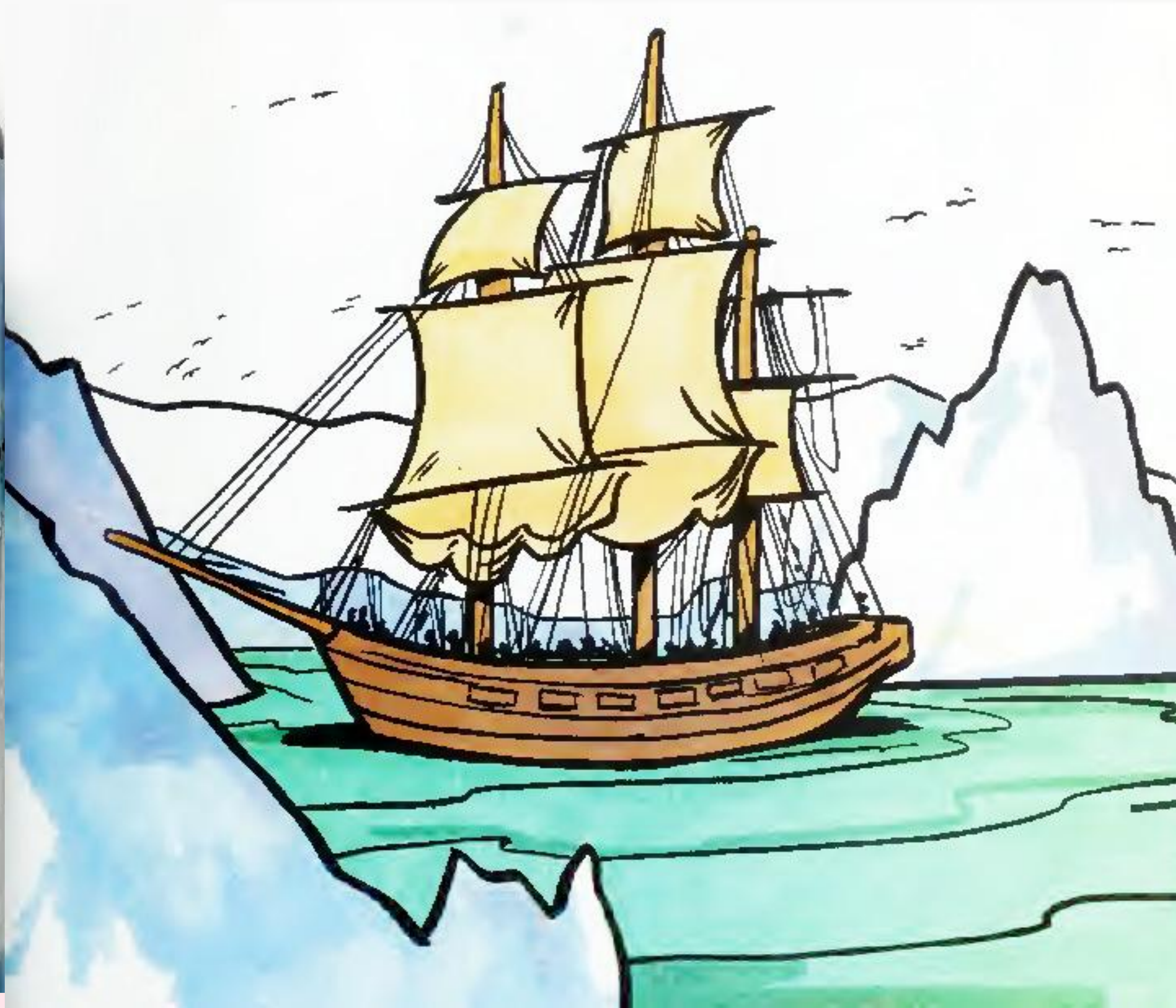

सफ़र के अन्त में *रेस्योलूशन* अंटार्कटिक वृत्त के दक्षिण का चक्कर लगा चुका था - वह तीन महासागरों - प्रशान्त, एटलान्टिक व हिन्द महासागर पार कर चुका था। जेम्स और उनका कर्मीदल दुनिया के पहले लोग थे दक्षिण में इतनी दूर जा सके थे।

क्योंकि अंटार्कटिक के पास समुद्र की सतह ठोस बर्फ की थी *रेस्योलूशन* ज़मीन तक नहीं पहुँच पाया। पर जेम्स कुक ने यह सिद्ध कर दिया कि सूदूर दक्षिण का यह क्षेत्र न केवल छोटा होगा बल्की वहाँ किसीका बसना भी असंभव होगा।

इस तीन वर्ष लम्बे सफ़र का सारा समय सुदूर दक्षिण के बर्फीले समुद्र में नहीं बीता। जेम्स दो बार ताहिती गए, वहाँ के निवासियों ने उनका फिर स्वागत किया। वे फिर से न्यूज़ीलैण्ड भी गए और वहाँ उन्होंने कई द्वीप तलाशे इनमें से एक द्वीप समूह को उन्होंने 'फ्रैंडली आइलैण्डस्' का नाम दिया क्योंकि वहाँ के लोग बेहद दोस्ताना थे।

एक दिन सॉल्टी जेम्स के पास ही रेलिंग पर आ बैठा और बोला, ''यह सफ़र तो साहसिक रहा है। तुम प्रशान्त महासागर के ऊपर-नीचे, उसके आगे-पीछे जा चुके हो। अब दक्षिणी गोलार्ध में खोजने को कुछ ख़ास बचा ही नहीं है।''

''इसका मतलब है कि घर लौटने का समय हो चुका है,'' जेम्स ने कहा।

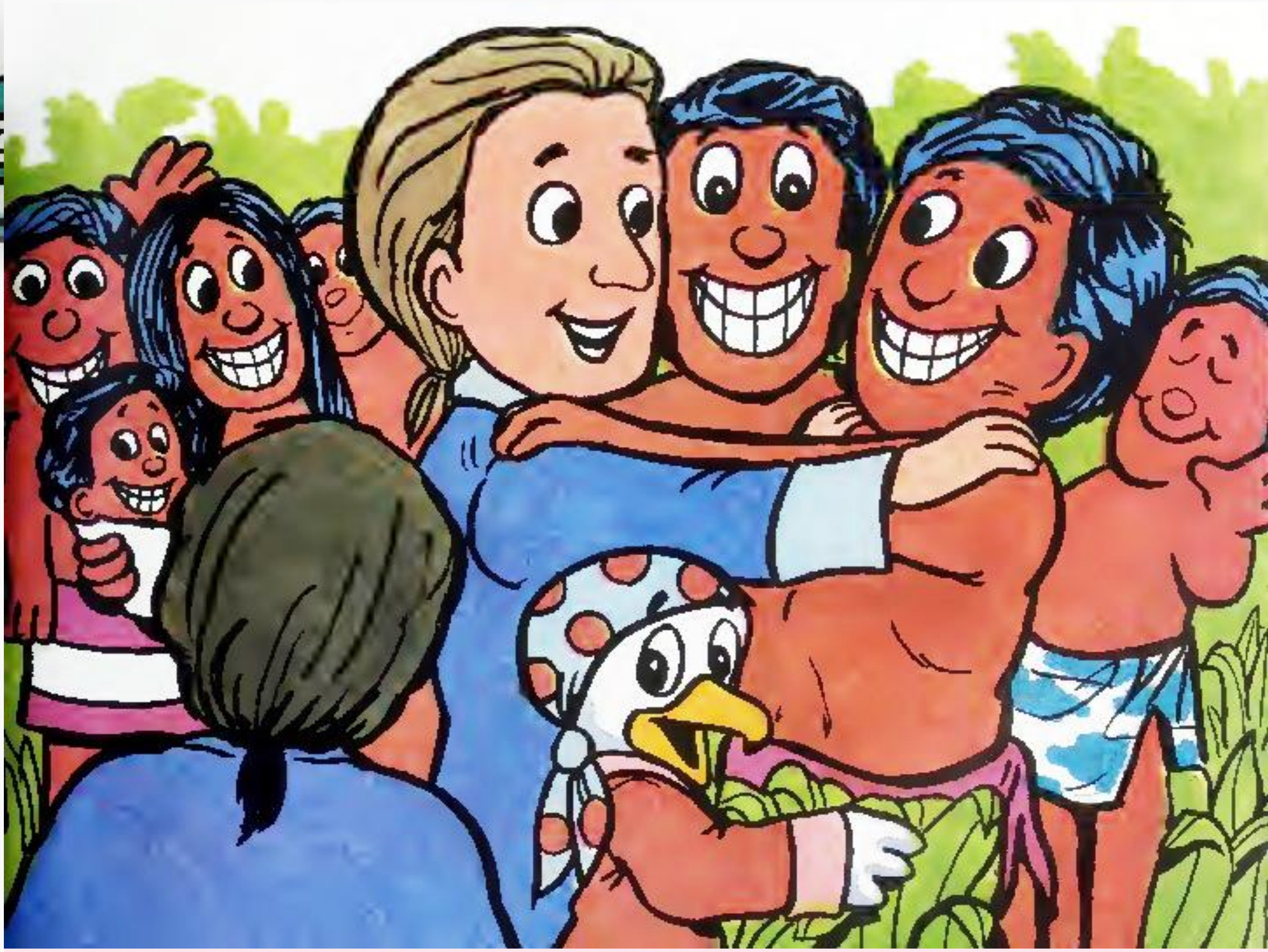

इंग्लैण्ड लौटने के बाद जेम्स के साथ बहुत कुछ घटा। विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें रॉयल सोसायटी का फैलो बनाया गया। नाविकों को समुद्री सफ़र में सुरक्षित रखने के कारण उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। उन्हें नौसेना में कप्तान का पद और एक आरामदेह काम दिया गया। जिसमें वेतन अच्छा था और कोई जोखिम नहीं था।

पर सुरक्षित और आरामदेह काम से जेम्स खुश नहीं हुए। उन्होंने एक बार सॉल्टी से कहा था कि वे समुद्र को छोड़ नहीं सकते। यह बात अब भी सच थी।

''इन लेगों ने मुझे ज़रूरत से ज़्यादा सम्मानित कर दिया है,'' एक दिन जेम्स ने अपने दोस्त से शिकायत की। ''वे यह भूल ही चुके हैं कि मैं जहाज़ का एक साधारण कप्तान बने रहना चाहता हूँ जो समुद्री सफ़र करे।''

''मुझे नहीं लगता कि तुम अपनी शेष ज़िन्दगी ज़मीन पर बिताओगे,'' सॉल्टी ने दिलासा देते कहा। ''याद रखो कि अगर तुम साहस बनाए रखो और मौका मिले तो उसे स्वीकारो, तो आगे भी रोमांचक सफ़र कर सकोगे। यह पहले भी तुम्हारे साथ हो चुका है, और फिर होगा।''

एक दिन नौसेना विभाग के लॉर्डस् ने जेम्स को एक शानदार दावत में आमंत्रित किया। वहाँ उन्होंने उत्तर-पश्चिमी जलमार्ग को तलाशने के लिए एक अभियान भेजने की बात की।

"काश हम उत्तरी अमरीका के ऊपर से कोई रास्ता तलाश सकते," एक ने कहा।

"लोग पिछले तीन सौ सालों से इसकी तलाश कर रहे हैं," दूसरे ने जोड़ा। "अगर इस अभियान का नेतृत्व कोई क़ाबिल इन्सान करे तो हम सफल भी हो सकते हैं।

"हम जहाज़ और ज़रूरत की सभी सामग्री देने को तैयार हैं," तीसरे ने कहा। "पर सब कुछ एक बेहतरीन और अनुभवी खोजी पर निर्भर करेगा जो अभियान की कमान संभालने को तैयार हो।"

जेम्स ने मेज़ के गिर्द नज़र घुमाई। "लॉर्डस्," जेम्स बोले। "अगर आप इजाज़त दें, तो मैं बखुशी अभियान का नेतृत्व करूंगा।"

नौसेना के लॉर्डस् मुस्कुराए। यही उम्मीद तो वे कर रहे थे।

योजना यह थी कि जेम्स दो जहाज़ - *रेस्योलूशन* और *डिस्कवरी* को ले उत्तरी अमरीका के पश्चिमी तट पर जाएंगे और उत्तरी छोर के गिर्द रास्ता तलाश, पूर्व से आने वाले जहाज़ से मिलेंगे।

सफ़र का पहला हिस्सा इतना अच्छा रहा कि जेम्स ताहिती और दक्षिणी प्रशान्त के उन अन्य द्वीपों में समय बिता सके जो उन्हें अच्छे लगते थे। तब दोनों जहाज़ उत्तर दिशा में बढ़े।

जब एक शाम सॉल्टी गर्म हवा के साथ उड़ता चला आया, जेम्स उसे देख खुश हुए। ''मैं दक्षिणी प्रशान्त को इतनी अच्छी तरह जान गया हूँ,'' उसने कहा। ''कि अब प्रशान्त के अनजान हिस्से की ओर बढ़ना अच्छा लग रहा है।''

''अगर हिम्मत से कोशिश करते रहो तो छानबीन करने को हमेशा कुछ नया तलाश सकोगे,'' सॉल्टी ने कहा।

''मैं कोशिश करता रहूँगा,'' जेम्स ने जवाब में कहा।

जल्द ही वे टापुओं के एक सुन्दर समूह के पास पहुँचे। जेम्स ने उन्हें अर्ल ऑफ सैंडविच के नाम पर सैंडविच आइलैण्डस् का नाम दिया। ये द्वीप अब हवाइयन द्वीप कहलाते हैं। वहाँ के लोग गर्मजोशी से मिले। जेम्स को उम्मीद थी कि वे वहाँ फिर लौट सकेंगे। पर उस वक़्त तो उन्हें उत्तर की ओर बढ़ना था।

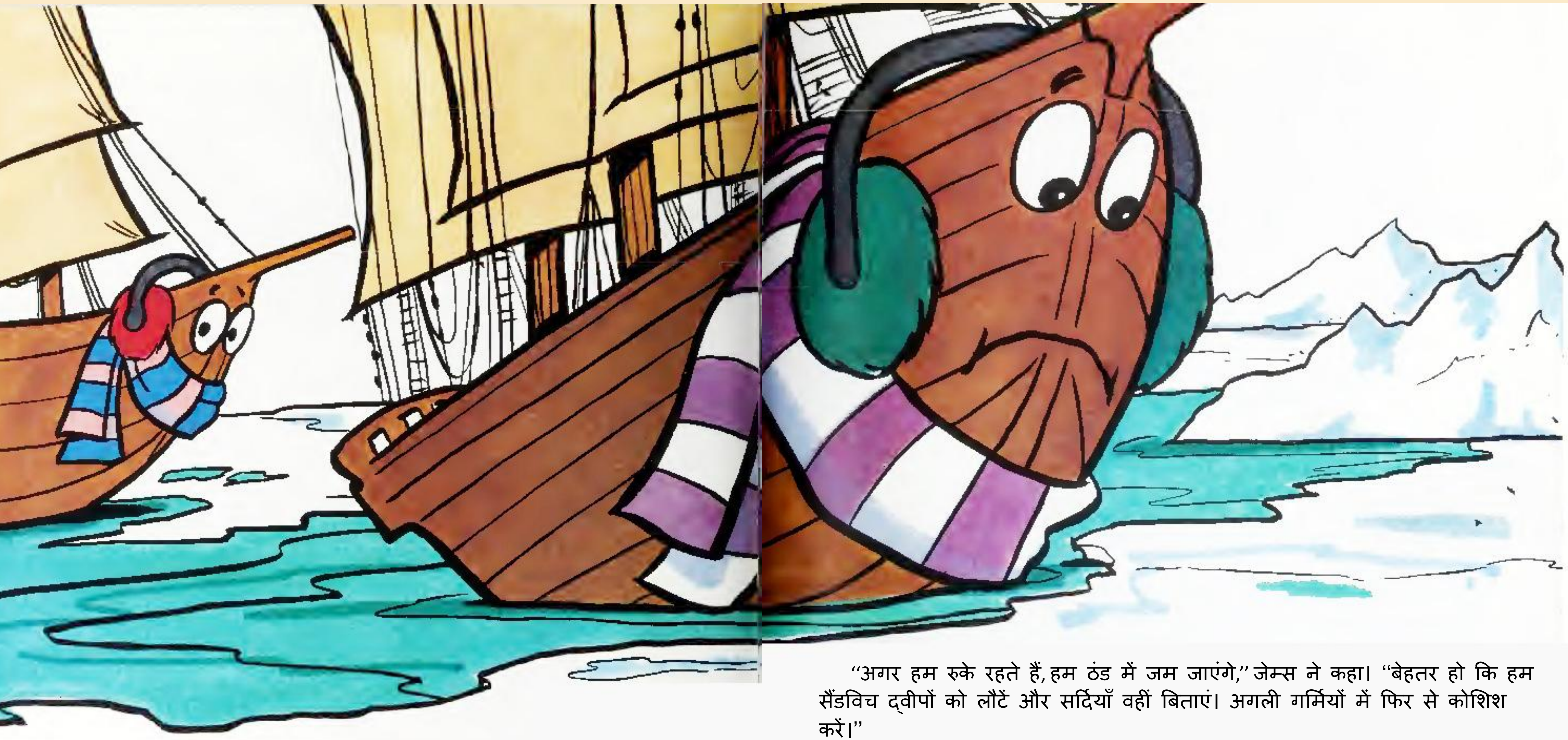

जब जहाज़ उत्तरी अमरीका के तट पर पहुँचे, तेज़ हवाओं ने उस रास्ते बढ़ना मुश्किल बना दिया। वैंकूवर द्वीप के दो-तिहाई रास्ते को पार करने के बाद उन्हें जहाज़ की मरम्मत के लिए चार सप्ताह रुकना पड़ा। वहाँ बसने वाले नूटका इण्डियन शान्त और दोस्ताना थे, उनका प्रदेश खूबसूरत था। फिर भी आगे उत्तर की ओर बढ़ जेम्स खुश थे। जब दोनों जहाज़ अलास्का प्रायद्वीप पार कर आर्कटिक महासागर में बढ़े मौसम अचानक ख़राब हुआ। उन्हें ऐसी बर्फ का सामना करना पड़ा जो क्षितिज के आर-पार तक पसरी हुई थी। सप्ताह भर जेम्स आगे निकलने का रास्ता तलाशते रहे। तब उन्होंने अपने अफ़सरों की बैठक बुलाई।

"अगर हम रुके रहते हैं, हम ठंड में जम जाएंगे," जेम्स ने कहा। "बेहतर हो कि हम सैंडविच द्वीपों को लौटें और सर्दियाँ वहीं बिताएं। अगली गर्मियों में फिर से कोशिश करें।"

हम अब जानते हैं कि आर्कक्टिक महासागर में बर्फ साधारण जहाजों का रास्ता हमेशा रोकती है। पर जेम्स कुक को यह पता नहीं चला, क्योंकि वे फिर से उत्तरी अमरीका लौट ही नहीं सके। वे अपने जहाज़ योजना के अनुसार सैंडविच द्वीप ले गए। वहाँ के आदिवासी उन्हें देख खुश थे। कुछ समय तक सब ठीक-ठाक रहा। तब कर्मीदल और आदिवासियों के बीच एक नाव के चोरी होने का विवाद छिड़ गया। जब जेम्स ने उसे सुलझाने की कोशिश की एक छोटी भिडन्त में वे मारे गए।

उनके कर्मीदल को इसका भरी दुख हुआ। वे जेम्स के समुद्री ज्ञान का सम्मान करते थे और एक ऐसे कप्तान के रूप में उनसे प्यार करते थे जो उनकी खुशहाली की फ़िक्र करता हो।

समुद्र के सटीक ज्ञान और अपने अदम्य साहस के कारण जेम्स कुक दुनिया के महान जहाज़ चालकों में एक बन सके।

हो सकता है कि तुम नन्हे जेम्स की तरह जहाज़ का सफ़र करने और नई खोज करने के सपने न देखते हो। तुम्हारे अपने ही सपने हों।

पर तुम्हारा जो भी सपना हो उसे साकार करने की संभावना तब बेहतर होगी जब तुम जीवन का सामना साहस के साथ करो। अगर तुम नई-नई चीज़ें जानने-सीखने को तैयार हो, जब तुम मौके का इन्तज़ार करने के बदले खुद मौके तलाशो।

अगर तुम यह सब करते हो तो तुम्हारे सपने सच हो न हो तुम एक रोमांचक और खुशियों से भरी ज़िन्दगी जी सकोगे।

ऐतिहासिक तथ्य

जेम्स कुक

1723 - 1779

जेम्स कुक का जन्म मार्टन, इंग्लैण्ड में 27 अक्तूबर 1723 में हुआ था। उनके पिता एक खेत मज़दूर थे। जेम्स होनहार बच्चा था। जिस खेत मालिक के लिए उसके पिता काम करते थे उसने गाँव की शाला में जेम्स की पढ़ाई में मदद की।

जब जेम्स सतरह बरस के हुए वे सेइथ्स की एक दुकान में काम करने लगे। सेइथ्स, जेम्स के घर से बारह मील दूर मछुआरों का गाँव था। सेइथ्स में दो वर्ष बिताने के बाद जेम्स, व्हिटबी के एक क्वेकर जहाज़ मालिक, जॉन वॉकर के शागिर्द बने। व्हिटबी यॉर्कशर के तट पर दक्षिण में एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह था।

आठ वर्षों तक जेम्स ने तटीय जहाज़ों में काम किया जो ब्रिटेन के तट से कोयला ले स्कैन्डिनेविया व बाल्टिक के बन्दरगाहों तक पहुँचाते थे। इन मज़बूत जहाज़ों ने जेम्स को जहाज़ों के संचालन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। सर्दियों में जेम्स गणित और उन दूसरे विषयों का अध्ययन करते जो तरक्की करने में उनकी मदद कर सकते थे।

1755 में जेम्स के सामने मिस्टर वॉकर के जहाज़ों में से एक की कप्तानी का प्रस्ताव रखा गया। पर जेम्स ने रॉयल नौसेना में भर्ती होना चुना। उन दिनों शाही नौसेना में जीवन बेहद कठिन था और जेम्स को एक बार फिर से साधारण नाविक की तरह काम शुरू करना पड़ा। उसी समय इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच जंग शुरू हो रही थी। हो सकता है कि जेम्स को यह कयास रहा हो कि नौसेना में जल्द ही विस्तार होगा और उन्हें तरक्की का मौका मिलेगा।

मई 1759 में जेम्स *मर्क्युरी* नामक जहाज़ के कप्तान के रूप में उत्तरी अमरीका के लिए निकले, जो अब कनाडा कहलाता है। वहाँ साल भर बिताने के दौरान जेम्स कुक, सेंट लॉरेन्स नदी का नक्शा बनाने वाले दल का हिस्सा बने। इस जल मार्ग से ब्रिटिश जहाज़ी बेड़ा सुरक्षित क्युबैक पहुँच सका। जेम्स ने इस दौरान सर्वेक्षण करना, खगोलीय अवलोकन करना और नौसंचालन (नैविगेशन) करने के साथ अधिक गणितीय गणना करना सीखा। उच्च-अधिकारी उनकी लगन और क़ाबलियत से प्रभावित हुए और उन्हें न्यूफाउंडलैण्ड के तट का सर्वेक्षण कर उसका नक्शा बनाने की ज़िम्मेदारी सौंपी।

जेम्स ने उस समय जो नक्शे बनाए उनका उपयोग अगले सौ से भी अधिक वर्षों तक होता रहा। जल्द ही वे एक उम्दा नौसंचालक और नक्शानवीस के रूप में मशहूर हो चले। उन्होंने एक सूर्य ग्रहण का अवलोकन किया और अपने अवलोकन रॉयल सोसायटी को भेजे।

उत्तरी अमरीका में बिताए वर्षों के दौरान भी जेम्स कई बार इंग्लैण्ड लौटे। 1762 में उन्होंने एलिज़ाबैथ बैटस् से विवाह किया और 1764 तक वे दो बेटों, जेम्स व नैथेनियल के पिता बन चुके थे। 1768 में रॉयल सोसायटी ने तय किया कि वह एक अभियान ताहिती तक भेजेंगे ताकि शुक्र ग्रह के पृथ्वी व सूर्य के बीच से गुज़रने की घटना का अवलोकन किया जा सके। यह अभियान दक्षिणी प्रशान्त की व्यापक छानबीन कर वहाँ महाद्वीप तलाशने का भी था, जिसका अस्तित्व लोगों के अनुसार वहाँ था।

जेम्स कुक को इस अभियान का नेतृत्व सौंपा गया। उनके साथ अनेक वैज्ञानिक व चित्रकार भी थे जो नए खोजे गए पेड़-पौधों और स्थानों का अध्ययन कर सकें। अभियान सफ़ल रहा। शुक्र के पारगमन का अवलोकन किया गया, न्यूज़ीलैण्ड का चक्कर लगाया गया, उसका नक्शा बनाया गया, ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट की खोजबीन की गई और कई नए द्वीपों को खोजा जा सका।

जब जेम्स और उनका जहाज़ *एडवैंचर* 1771 में वापस इंग्लैण्ड लौटे, लगभग तुरन्त ही उनके ही नेतृत्व में एक नए अभियान की योजना बनी।

रेसोल्यूशन व *एडवैंचर* नामक जहाज़ों को दक्षिणी प्रशान्त महासागर की छानबीन करनी थी। उन्हें पता लगाना था कि दक्षिणी प्रशान्त में वास्तव में कोई विशाल महाद्वीप है भी या नहीं।

यह दूसरा सफ़र विश्व के इतिहास में महान खोजी यात्राओं में एक था। जेम्स का जहाज़ *रेसोल्यूशन* किसी भी दूसरे जहाज़ की तुलना में दक्षिण में कहीं अधिक दूर तक जा सका। यह भी सिद्ध हो सका कि कि वहाँ कोई बड़ा महाद्वीप नहीं है। पर कई और द्वीप तलाशे जा सके और उनके नक्शे बनाए जा सके। जब तक जेम्स इंग्लैण्ड लौटे दक्षिणी प्रशान्त का नक्शा लगभग वैसा पूरा बन सका जैसा आज है।

जब उत्तरी अमरीका (कनाडा) के ऊपरी हिस्से के गिर्द एक उत्तर-पश्चिमी जलमार्ग को तलाशने के योजना बनी, जेम्स कुक ने उसकी कमान संभालने की पेशकश खुद की। उनके प्रस्ताव को बखुशी स्वीकारा गया। इस अभियान ने जेम्स को फिर से ताहिती जाने का अवसर दिया जिससे उन्हें प्यार था। उत्तर दिशा में बढ़ते समय उन्होंने हवाई द्वीपों को खोजा। पर कनाडा के तट के ऊपर बढ़ने का जलमार्ग कठिन था। दोनों ही जहाज़ों को वैंकूवर द्वीप में मरम्मत के लिए रुकना पड़ा। वे उत्तर में बेरिंग जलसंधि तक पहुँचे, पर तब उन्हें वापस लौटना पड़ा क्योंकि वहाँ समुद्र ठोस बर्फ़ में तब्दील हो चुका था। जेम्स की योजना थी कि वे हवाई द्वीपों में सर्दियाँ बिता गर्मियों में वापस उत्तर की यात्रा करेंगे। उनके हवाई द्वीपों के निवासियों से संबंध अच्छे थे, उन्हें किसी तरह की समस्या का अंदेशा नहीं था। पर एक नाव की चोरी के मुद्दे पर नाविकों और आदिवासियों में झड़प हुई और जेम्स कुक 4 फरवरी 1779 में मारे गए।

जेम्स की मौत पर उनके कर्मीदल को बेहद दुख हुआ, क्योंकि वे न्यायप्रिय और ईमानदार कप्तान होने के साथ एक बेहद अच्छे नाविक भी थे। तमाम स्थानों में काम कर रहे नाविक खुद को उनके प्रति कर्ज़दार मानते थे क्योंकि जेम्स ने ही समझाया था कि कर्मीदल के स्वास्थ्य के लिए ताज़ा भोजन और रहने के स्थान की साफ़-सफ़ाई महत्वपूर्ण है। उन्होंने नौसंचालन और नक्शे बनाने के नए मानक स्थापित किए थे। अपने मातहत काम करने वालों को वे बखूबी संभालते थे। प्रशान्त क्षेत्र के नक्शों में आज भी सैंकड़ों द्वीपों, शिखरों, खाड़ियों और नदियों के ऐसे नाम मिलेंगे जो जेम्स ने दिए थे। जेम्स कुक वास्तव में आज तक के महान नाविकों और खोजियों में एक हैं।